साईं का आनंद पथ

SAI KA ANAND PATH

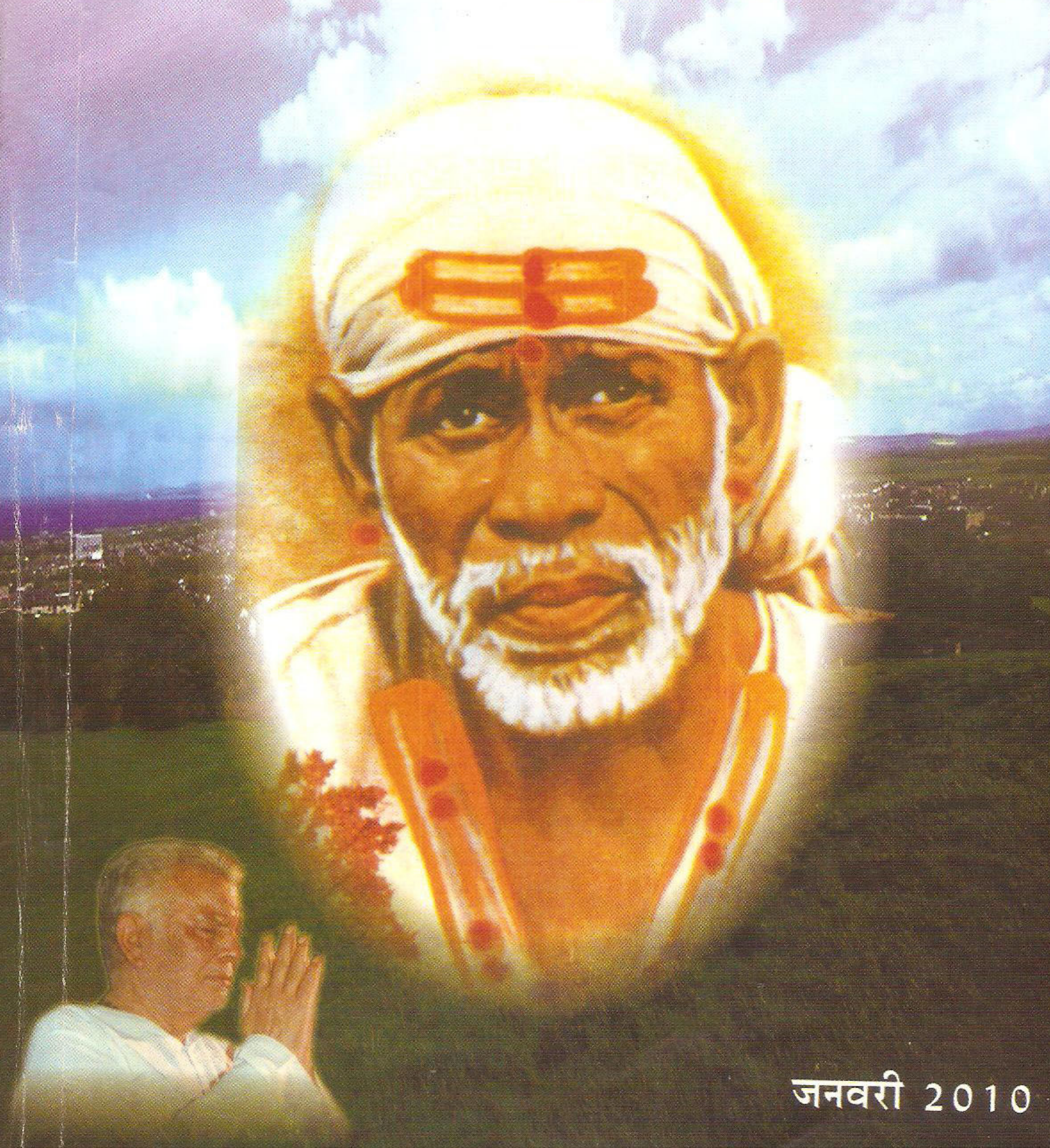

जनवरी 2010

साईं का आनंद पथ
SAI KA ANAND PATH

QUARTERLY MAGAZINE

January – 2010

Correspondence Address
SAI KA ANAND PATH
Sri Anand Sai Marg
Besides Ananda Apts.
Clarke Town,
NAGPUR-440 004.(M.S.)
Ph.No. 6574825
Cell : 9823134765
e-mail :
saipublications@rediffmail.com

Published & Edited by :
Ranveer Taneja

SUBSCRIPTION :
Life (25 Years) : Rs. 1400/-
5 Years : Rs. 350/-
2 Years : Rs. 200/-

Printed at :
Mudrashilpa Offset Printers, Nagpur
Type setting :
Lipi Systems
Dhantoli, Nagpur.
M.: 9921614855

Please quote your Registration No. while corresponding.

CONTENTS / अंतरंग

हिन्दी विभाग

अमृत सन्देश (Divine Nectar)	...	1
श्री साईं गीता (कुछ अंश)	...	2
समर्पण	...	3-8
आनंद का पथ	...	9-13
फ़कीर का वरदान फ़कीरी	...	14-18
दु:ख देवे अधर्म क़माई	...	19-21
श्री साईं गीता सिखलाती है	...	22
कर्ता साईं जान	...	23-26
जन रक्षक मेरे साईं	...	27-28
परम सुखम श्री साईं सेवा	...	29-33
श्री साईं गीता अमृतम्	...	34
साईं प्रीतमा तुझपे कुरबान	...	35-37
शब्दब्रह्म – श्री साईं गीता	...	38

English Section

Our Heart – Our Soul	...	39-41
Sai Supreme	...	42
Divine Path	...	43-44
Your Own Page	...	45-48

May Sai's Blessings
Enlighten you in the year 2010 – *Editor*

The editor does not accept responsibility for views expressed in articles published.

अमृत-सन्देश

DIVINE NECTAR
(The Message of Sri Anand Sai penned in His own hand)

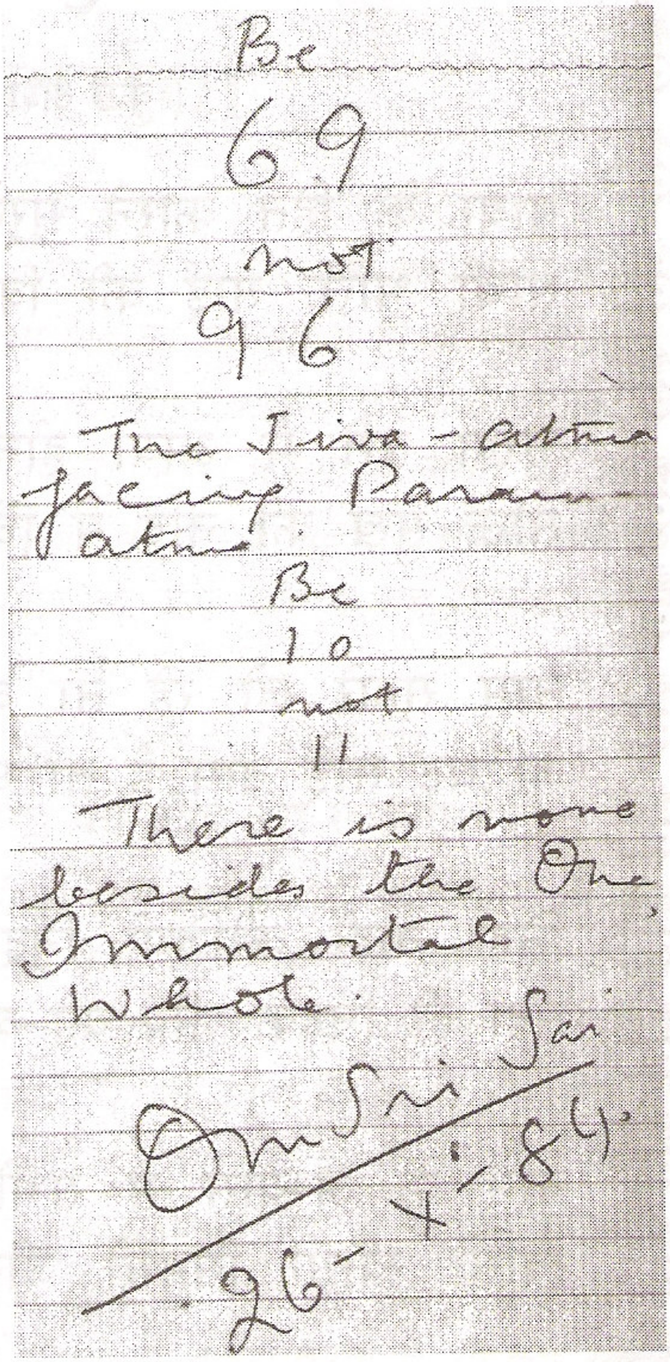
Be
69
not
96
The Jiva-atma
facing Param-
atma.
Be
10
not
11
There is none
besides the One
Immortal
Whole.
Om Sri Sai
26-X-84.

Be 69 not 96.
The Jiva-atma
facing Paramatma.
Be 10 not 11
There is none besides the
One Immortal Whole.

Om Sri Sai
26-10-1984

श्री साईं गीता

(कुछ अंश)

माया के हित कारने मूरख जनम् गंवाए ।
साची भक्ति साईं की विरला कोई पाए ।।

श्री साईं गीता।।७४९।।

शरण तेरी मैं आयो होनी हो सो होए ।
सोऊँ सुख की नींद मैं चिंता नाही कोए ।।

श्री साईं गीता।।७३४।।

नाम सहारे जो रहे ता की हो न हान ।
जा घट साईं नाम है ता घट श्री भगवान ।।

श्री साईं गीता।।७४३।।

निंदा नाहीं कीजियो निंदा बड़ो है पाप ।
सदा ही निंदक जीव को व्यापे तीनों ताप ।।

श्री साईं गीता।।७५०।।

नाम के अभ्यास से सभी अमंगल जाएँ ।
स्वासों स्वासा सिमरते जीव शान्ति पाएँ ।।

श्री साईं गीता।।७४५।।

" ॐ श्री साईं "

समर्पण

सत्गुरु, पूरण पुरुष परमात्मा, परम पूज्य, जग पालनहार, प्राणप्यारे श्री आनंद साईं जी को नतमस्तक हो आप सभी से फिर एक बार मिलन हो रहा है। यह मिलन वर्ष २०१० के प्रथम माह की शुरुवात में ही हो रहा है। अतः बाबा साईंनाथ को प्रणाम कर जगत् को शांति बख़्शने की प्रार्थना उनके श्री चरणों में रखते हैं – हे बाबा दीनदयाल! अपनी करुणा से ***जगत् को शांति प्रदान कीजिए।*** *आप ही के द्वारा बार-बार कहे गए ये तीन शब्द* ***सबका मालिक एक*** *जगत् के हर बाशिंदे को समझ आ जाए और वे सब मिलकर अमन और चैन से ज़िदगी बशर करें। आमिना*

तेरे दर पर हर इक आदम् भिखारी है।
कोई धन, संपति शौहरत का कोई तेरा सवाली है।।

हे प्राणप्रिय तेरे दर पर जो भी आता है कुछ उम्मीदें लेकर आता है। कुछ पाने की लालसा लेकर ही हर शख़्स तेरी चौखट पर माथा टेकता है, सजदा करता है, नाक रगड़ता है। हर इक कुछ चाहत लिए तुझे पुकारता है, अरदास करता है, हाथ उठाकर दुआ करता है, प्रार्थना करता है। तो हर इक बंदा जो आपके द्वार तक आता है वो भिखारी ही हुआ ना। अब इन भिखारियों में संसारी तौर से धनवान हों, बड़े ओहदे पर विराजमान हों, रंक हों या फिर राजा हों, तेरे दर पर तो सारे के सारे भिखारी ही हैं ना। अब यह बात और है कि ये भिखारी आपसे क्या माँगते हैं? कोई धन की चाहना करता है, तो कोई संतान की। कोई जमीन- जायदाद चाहता है तो कोई शौहरत की कामना लेकर आता है। कोई ऊँचा पद चाहता है तो कोई महल माड़ियाँ चाहता है। कहने का तात्पर्य

यह भिखारी कटोरा लिए आपके द्वार पर आता है। आपके द्वार की महिमा भी तो महान है। **जो माँगोगे वही मिलेगा।** आप किसी को भी खाली हाथ नहीं लौटाते। जो भी आपकी चौखट पर आकर फरियाद करता है आप उसकी झोली भरकर ही उसे विदा करते हो। लेकिन इन सभी भिखारियों के साथ टाँवां-टाँवां कोई ऐसा भिखारी भी होता है जो आपसे सबसे नायाब वस्तु की भीख माँगता है। आप ऐसे भिखारी को खुद भी ढूँढते रहते हैं लेकिन ऐसे भिखारी की झोली एकदम नहीं भरते। ऐसे भिखारी आप से और कुछ नहीं आपको ही माँगते हैं। वे आपके दरवाज़े पर खड़े होकर हाथ उठाकर बड़े ही दीन भाव से पुकार करते हैं – "हे मेरे प्यारे बाबा तेरे दर से आज तक कोई भी खाली हाथ नहीं लौटा। आपका अपना यह बालक आपके दर पर झोली फैलाए खड़ा है। हे मेरे प्यारे साईं इस बालक की झोली में भी कुछ डाल दो। इसकी फरियाद पर गौर फरमाओ। इस बालक को और कुछ भी नहीं बस एक तू ही चाहिए। तू, बस तू, तेरा ये बालक तुझसे तुझ को ही पाना चाहता है। इस बालक को केवल आपकी ही चाहत है। इस बालक को खैरात में अपना साईं चाहिए। तेरे दर पर जो भी आया उसकी मुरादें तूने पूरी की हैं। तेरा अपना यह बालक एक तेरी मुराद लिए खड़ा है। इसकी भी झोली भर दो दाता बालक की पुकार सुन, साईं माँ का भी हृदय पसीज जाता है, उनकी करुणा दृष्टि उस बालक पर पड़ती है। माँ को अपनी ओर निहारते हुए देख कर बालक भी बाग-बाग हो जाता है उसके नयनों से नीर बहना शुरु हो जाता है। साईं माँ से उसका स्नेह देखते ही बनता है परन्तु साईं भी इतनी जल्दी उसकी झोली नहीं भरते। उसको खाली हाथ तो नहीं भेजते परन्तु उसकी झोली में खुद को भी नहीं डालते। प्रेम के कुछ प्याले अपने बच्चे की झोली में अवश्य डालते हैं। बच्चे का माँ के प्रति प्रेम बढ़ता जाता है। बच्चा माँ के बिना रह नहीं पाता। बार-बार अपने साईं के द्वार पर झोली फैलाकर साईं से साईं को माँगता है। जब यह प्रेम इन्तहा हो जाता है साईं माँ देखती हैं कि बच्चे का प्रेम सच्चा है सुच्चा है, अगाध

है तो उनसे भी रहा नहीं जाता। वे अपने ऐसे प्यारे बच्चे को अपनी बाहों में लेते हैं अपने आँचल में छिपा लेते हैं। बच्चा साईं को पाकर निहाल हो जाता है। जब साईं ही मिल गए तो क्या पाना बाकी रह जाता है। साईं मिल गए तो सारी कायनात मिल गई। प्रेम, प्यार, इश्क, मोहब्बत की शुरुवात दो से होकर एक पर खत्म हो जाती है।

सत्गुरु जैसा हितैषी जगत् में कोई दूसरा है ही नहीं। सत्गुरु का हृदय मक्खन से भी नरम होता है। सत्गुरु हर पल हर क्षण अपने शिष्यों की भलाई का ही विचार करते रहते हैं। उनको अपने शारीरिक कष्टों की परवाह नहीं रहती। सात समुद्र पार से भी जब उनका शिष्य उन्हें पुकारता है तो सत्गुरु का कोमल हृदय झट पसीज जाता है और वे अपने शिष्य की रक्षा के खातिर, उसके कठिन समय में सहारा देने के लिए, उसे मदद करने, उसकी डूबती नैय्या को उभारने के लिए कुछ पलों में ही वहाँ पहुँच जाते हैं। सत्गुरु अपने बच्चों को अपने शिष्यों को दुःख तकलीफ में देख नहीं सकते। अपने बच्चों की तकलीफे, अपने शिष्यों का कष्ट उनसे सहन नहीं होता। अपने शरीर पर आई हर तकलीफ को वो नज़र अंदाज़ करते हैं लेकिन अपने बच्चों के कष्ट निवारण के लिए वे सदा व्याकुल रहते हैं। सच कहते हैं जन्म जन्मांतर के भाग्य जागृत हुए हमें भी अपने प्राणप्यारे सत्गुरु श्री आनंद साईं जी के साथ 25-30 साल रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपने शरीर की अंतिम साँस तक उन्हें अपने बच्चों पर, अपने शिष्यों पर आई व आने वाली तकलीफों को हरते रहे। हमने अपनी आँखों से देखा और खुद अनुभव किया। सच कहते हैं सत्गुरु का हृदय बहुत ही नरम, ममता और दया से भरा होता है। करुणा तो देखते ही बनती है। क्षमा उनके अंग-अंग में समाई है। किसी के अवगुणों को गुण करके देखना कोई सत्गुरु से सीखे। प्यार, प्यार और प्यार ही बाँटते हैं सत्गुरु। कोई कितना भी खराब हो, लाखों-करोड़ों नहीं अरबों-खरबों भी पाप किए हों तो भी जब वो श्री गुरु चरणों में सच्चे मन से पाहिमाम्, पाहिमाम्, पाहिमाम्, रक्षमाम्,

रक्षमाम्, रक्षमाम् कहता हुआ पहुँचता है तो सत्गुरु उसका किया सब निसार कर उसे स्वीकार करते हैं। उसे अपने सीने से लगा लेते हैं।

मेरा मालिक भी तो कितना महान है ।
हर इक की पूरी करता फरियाद है ।।
नज़र उसकी अपने उस बच्चे को खोजे है ।
जो उससे उसको पाने को पहुँचे है ।।
दिख जाता जब उसको ऐसा दिवाना है ।
जिसको केवल साईं को पाना है ।।
रुख से तब उसके नकाब उठता है ।
दिवाने को उसका जलवा दिखता है ।।
क्या खूब मेरा मालिक क्या गज़ब उसका खेल ।
देता तो सब को है बस जलवे का ही फेर ।।

प्राणप्यारे पापा एक किस्सा सुनाया करते थे। एक बार जीसस क्राईस्ट किसी गाँव में गए हुए थे वहाँ वे ईश्वरीय वाणी लोगों को सुना रहे थे। उस गाँव के रईसों को भी जीसस से मिलने की जिज्ञासा हुई। वे भेंट वस्तु व नौकर चाकर के साथ जीसस को मिलने पहुँचे। उस समय जीसस क्राईस्ट के पास उस भाग के नामी गिरामी चोर-उच्चके बैठे हुए थे। जीसस उन्हें सत्मार्ग समझा रहे थे। चोर अपने कर्मों पर पश्चाताप करते हुए जीसस के चरणों में शीश झुका कर उनसे क्षमायाचना कर रहे थे। जीसस ने उन चोरों को काफी समय दिया, समझाया-बुझाया, ईश्वर का सत्संदेश दिया, उनका मार्गदर्शन किया। इधर अमीरों की बेताबी बढ़ती जा रही थी। कैसा है यह जीसस हम गाँव के श्रीमंत बाहर बैठकर उनका रस्ता देख रहे हैं और वे हैं कि चोरों के साथ चर्चा किए जा रहे हैं। उन्हें हमारी जरा भी कदर नहीं। आखिरकार चोरों को जीसस ने समझा-

बुझाकर विदा किया। उन्हें छोड़ने वे दरवाजे तक आए। अमीरों को लगा कि वे उन्हें अंदर बुलाने आए हैं। लेकिन वे चोरों को विदा कर वापस अपने कक्ष में चले गए। अमीरों को एक और झटका लगा। फिर जब उन्हें मिलने का समय दिया गया तो वे अंदर जाते ही जीसस से गिला शिकवा करने लगे। हम गाँव के इज्जतदार लोग आपसे मिलने के लिए कितने समय से बाहर बैठे हैं। आपने हमें जल्दी समय नहीं दिया। आप उन चोरों के साथ ही घंटों लगे रहे, आप को हमारी कदर ही नहीं। न जाने और क्या-क्या बोले। उनकी बातें सुनकर जीसस क्राईस्ट बोले देखो तुम्हारे ही मुख से सच्चाई निकल रही है। तुम्हारा अभिमान तो देखो सातवें आसमान को छू रहा है। तुम अपनी रईसी का बखान करते थक नहीं रहे हो। वो जो तुम्हारे पहले मेरे पास बैठे थे वे अपने किए पर पछता रहे थे। वे बार-बार क्षमायाचना कर रहे थे। उन्हें तिलमात्र भी अभिमान नहीं था। वे बड़ी दीनता से मेरे पास अपने किए का प्रायश्चित्त करने के लिए आए थे और तुम, सच तो यह है कि तुम उनसे भी बड़े चोर हो। लेकिन तुम्हारे अंदर चोरी से, नापाक तरीकों से जमा की गई संपत्ति का गुरूर भरा है। तुम चोर होकर भी खुद को चोर नहीं मानते। तुमसे तो वो अच्छे जो अपने आपको चोर मानकर बड़ी दीनता, हलीमी के साथ अपने किए पर शर्मिंदा होकर मेरे पास आए, अपनी करनी पर वो शर्मसार थे, रो-रोकर क्षमायाचना कर रहे थे। उनके उद्धार की जगह है परन्तु तुम्हारे अहंकार के कारण तुम्हारे उद्धार की जगह ही नहीं है। इस कथा से आप क्या सीखते हैं यह हम आप पर ही छोड़ते हैं। दो-तीन तरीकों से इस कथा का अर्थ निकाला जा सकता है। प्राणप्यारे पापा के द्वारा बताई गई यह कथा कितनी मार्मिक, कितनी शिक्षाप्रद है।

हमारी दौलत क्या है?

खुशनसीब हैं हम जो तेरी रहमतें हमने पाईं ।
प्यार अनुराग तुम्हारा हमरी दौलत आनंद साईं ।।

अजब-गजब क्या है?

कहते हैं तुम दूर कहीं किसी लोक में रहते हो ।
क्या अजब सी बात है करीब मेरे फिर कैसे हो ।।

हमें क्यों अपनाया?

तेरा दिल हम पर आया ना जाने क्या दिखा तुमको ।
हम तेरे लायक तो नहीं फिर भी अपना लिया हमको ।।

श्री गुरु चरणों में पहुँचना बहुत बड़ी बात है लेकिन यह भी गुरु दया से ही सम्भव है। श्री सतगुरु चरणों में पहुँचकर भी उनसे प्रीत हो जाना एक महत्त्वपूर्ण कदम है लेकिन यह फिर सतगुरु की कृपा हो तब ही सम्भव है। इन सबसे परे और अति महत्वपूर्ण है सतगुरु की दया, कृपा, अनुकंपा पाना। और जिस पर यह हो गई उनकी तो मानो बात बन ही गई। गुरु दया किस पर, कब, क्यूँ और कैसे होगी इसका कोई बन्धन नहीं। अध्यात्म है क्या? बस एक ही बात जानना है, अध्यात्म की शुरुवात गुरु दया से होती है और अंत भी गुरु दया से ही होता है। अगर जगत् में कुछ पाना ही है तो गुरु दया की याचना करते जाओ। क्या पता कब मुर्शद की रहमत हो जाए और बात बन जाए।

वर्ष 2010 में आप सभी पर गुरु दया बरसे और बाबा दीनदयाल के मार्ग पर सभी अग्रसर हों। माँ की ममता हम सभी पर हो। जगत् में शांति और अमन बहाल हो इस कामना के साथ आप सभी से इजाज़त चाहते हैं।

"जै जै दाता आनंद साईं"

श्री गुरु चरण-कमलों में सादर समर्पित

''ॐ साईं आनंदाय नमः''

आनंद का पथ

(श्री आनंद साईं जी के अमृत वचन)

''आनंद का पथ'' इस शीर्षक के अंतर्गत या फिर अन्य शीर्षकों के अंतर्गत प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं जी द्वारा दिए गए प्रवचनों को लिपिबद्ध कर सर्व जगत् के कल्याण के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। लगभग हर बार ही ऐसा होता था कि प्राणप्यारे गुरुदेव प्रवचन शुरु ही करते थे और फिर सोयम् ईश्वर के रूप से सीधी वाणी आना शुरु हो जाती थी। ऐसा एक बार नहीं अनेकों बार हमने आँखों से देखा और कानों से सुना है। इसीलिए इस पत्रिका में दिए जा रहे लिपिबद्ध प्रवचन में कई बार माँ भगवती या बाबा साईंनाथ सोयम् हमें अपना रास्ता बताते हैं। पाठकों की जानकारी व प्रकाशित प्रवचन ठीक से समझने हेतु ये जानकारी दी जा रही है।

– संपादक

दुःखहर्ता साईं

सर्व जगत् में इस समय बहुत दुःख है। लोग दुःख के मारे कराह रहे हैं। बाबा उंगली उठा कर दिखा रहे हैं इस संसार में शांति कहाँ है। सुख कहाँ है। सुख शांति अपने अंदर में है। जिसकी आत्मा शुद्ध है, पवित्र है वो ही आनंद ले सकता है दूसरा नहीं। यदि नाम-सिमरन के साथ हम आदत डाल दें सिर झुकाने की तो हमारा कितना कर्म कट जाएगा। जो केवल मेरे आसरे जीता है उसकी जीत होने ही वाली है, उसकी हार कैसी। जो अपने बल-बुद्धि के भरोसे जीता है उसकी हार होती ही है। अर्पित हो जाओ पार हो जाओगे। रक्षा का हाथ चाहते हो तो सच्चे मन से इन चरणों में गिर जाओ। जो इन चरणों में गिर रहा है, रक्षा की भीख माँग रहा है वो पार होते जा रहा है। इस रक्षा के हाथ की भीख माँगो पार हो जाओगे। तर जाओगे। यहाँ भी रक्षा होगी आगे भी रक्षा होगी। लाख साधनाओं की एक साधना है पल-पल ईश्वर की इच्छा में रहना। मेरे अर्पित हो गए फिर

डर काहेका? मैं साथ हूँ फिर डर काहेका? अपने जीवन में, जगत् के जीवन में मेरा खेल देखो, आनंद मिलेगा। जब जीव का अपनापन एक बार मिट जाता है फिर खेल खेल ही होता है और वो खेल आनंद देता है। जीव की रहनी सच्चाई और सादगी में होनी चाहिए। जिसने अंदर का रस चख लिया उसको बाहर के विषय-वासना क्या कहते हैं। जिसने आत्मा का रस चख लिया उसको बाहर का विषय-वासना क्या कहता हैं अपने आप को मेरे हाथ में दे दो तुम्हारा काम हो जाएगा। कोटि जन्मों की बिगड़ी बन जाएगी। हाथ में देना मतलब अपनी मर्जी को खतम कर देना। जिस स्थिति में भी रखूँ खुशी से रहते जाओ। डरने की जरा भी बात नहीं है उसके लिए जो सच्चे मन से मेरा हो जाता है उसके कर्म तो जरूर पूरे करवाए जाते हैं पर रक्षा का हाथ साथ रहता है।

नाता जोड़ना तो अविनाशी के साथ जोड़ना। वो नाता कैसा जो चार दिनों में टूट जाए। भगवान को पहिचानना ही मुश्किल है। एक बार पहिचान हो गई तो फिर मुश्किल क्या है। साईं के बन कर रहो। व्यापक शक्ति घट के अंदर से लाख आँखों से हमें देख रही है। हमारे हर विचार हर कर्म को देख रही है। उस व्यापक शक्ति को देखते रहना सच्चा ज्ञान है। सच्ची भक्ति है। **कर्म बंधन के अनुसार जो कुछ शरीर के ऊपर आए उसको सहन करना चाहिए मेरे अर्पित होकर। यदि तुम मेरे अर्पित हो तो कर्म थोड़े-थोड़े में पूरा होकर निकल जाएगा। अर्पित नहीं होओगे तो कर्म पूरी मार देकर जाएगा। यम की मार उसी को पड़ती है जो अपनी मर्जी चलाता है। अपनी मर्जी उठाता है।** जो अपनी इच्छा में नहीं रहता अपनी मर्जी नहीं उठाता उसका सम्पूर्ण जीवन हरि इच्छा में चल रहा है तो फिर उसको काहे का भय। जो मेरे हो चुके हैं उनकी रक्षा के लिए मैं यहाँ भी उनके साथ हूँ मरते समय भी उनके साथ हूँ, आगे भी उनके साथ जाती हूँ। जो मेरे अर्पित किए बिना कोई कर्म नहीं करते मैं उनका आभारी हूँ। जो मेरे आसरे रहते हैं ना कि अपने बल बुद्धि के आसरे उनका उद्धार होने ही वाला है। जो मैं हूँ सो तू है। तेली की दीवार तोड़ डालो। भेद-भाव की दीवार तोड़ डालो। मुझ संग मिल कर एक हो जाओ। भीख माँगनी ही है तो दया की भीख माँगो।

दया मिल जाती है तो सब सुलभ हो जाता है। नाम ऐसा लेना है कि हम नामी से दया की भीख माँग रहे हैं। सेवा के कार्य के लिए एक-दो पार्टियाँ बाहर जरूर जानी चाहिए। कितने घोर से घोर पाप क्यों न किए हो इस साईं की सेवा द्वारा साईं तक पहुँचा जा सकता है।

संसार में अच्छे और बुरे दोनों तरह के लोगों से वास्ता पड़ता है यदि हम साईं अर्पित होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे तो ये हमारा कुछ बिगाड़ नहीं करेंगे। सबसे प्रेम करना है, घृणा किसी से भी नहीं करनी है। माँ के आसरे अपना जीवन व्यतीत करना है। जो शुद्ध करनी करेगा उसका उद्धार हो जाएगा। जो उल्टी करनी से कभी बाज़ नहीं आता है उनको दण्ड दिया जाता है। यहाँ से जीवों में सुख शांति फैलाना है, मैला नहीं सोचना है सबने। चार वेद, छह शास्त्र, अठाराह पुराण सब पढ़ लिए परन्तु परहेज नहीं किया जन्म-मरण की बाजी हार गई। परहेज से ही जीव की बिगड़ी बन जाती है और परहेज न करने से बनी हुई बिगड़ जाती है। दवाखाने तो बहुत हैं औषधियाँ भी बहुत मिलती हैं। परहेज कोई नहीं बताता। बिना परहेज किए बीमारी जा नहीं सकती। दु:ख जा नहीं सकता है। पूजा-पाठ सब कुछ किया लेकिन पाप कर्मों से, उल्टे कर्मों से परहेज नहीं किया क्या बनेगा। रुखी-सूखी खा लिया, परहेज किया, हारी बाजी जीत गई। आखरी समय परहेज करने की ही रट लगाई जाती है इस जीव ने आकर कितना पाप कर्मों से, खोटे कर्मों से परहेज़ किया। इसीलिए यहाँ साधना से ज्यादा परहेज पर जोर दिया जाता है। साधना करना बहुत ही जरूरी है।

संसार की रीत ही है, जिसके पास चार पैसे हैं उसको मान बहुत देते हैं। जो तंगी में है उसका तिरस्कार करते हैं। खोटे कर्मों से बाज़ आ जाना चाहिए फिर साधना तुरन्त फल देती है। कर्मों की गति बहुत न्यारी है जो कुछ पीछे से निश्चित होकर आया है वो होकर रहता है। जो भजन में मन लगाता है वो पार हो जाता है यदि उसका जीवन ठीक है तो। पूरन में विश्वास करना अत्यंत जरूरी है। **पूरन की की हुई सेवा कभी खाली नहीं जा सकती है। पूरन की सेवा एकदम जीवन को उठा कर ले जाती है। मुझ पूरन की सेवा से सब पाप-**

ताप दूर होते हैं। मुझ पूरन की सेवा करने वाले की सद्‌गति होती है। मुझ पूरन की सेवा पार उतारनहार है। पूरन की सेवा से जीव तर जाता है। मुझ पूरन की सेवा रक्षा करती है। जो मुझ पूरन की सेवा सच्चे मन से करता है मैं उसका आभारी रहता हूँ। पूरन की सेवा, पूजा और ध्यान में क्या फर्क है। पूरन की सेवा से दूसरों का परहित होता है। पूरन की सेवा के अभ्यास में सदा लगे रहो।

''थोड़ा किया बहुत मानते श्री विष्णु भगवान।'' साईं और विष्णु भगवान में भेद नहीं है। पूरन की सेवा पूरे जतन से करनी चाहिए जैसे गुरु बताएँ ऐसे करनी चाहिए। अपनी मर्जी नहीं लानी चाहिए। गुरु के अंदर बैठा सब काम मैं कर रहा हूँ। जैसे-जैसे गुरु बताते जाएँ ऐसे-ऐसे सेवा करनी चाहिए। सादगी और सच्चाई की जगत् को बहुत जरूरत है। सादगी और सच्चाई को छोड़कर जीव भयानक गड्ढे में चले गया है। जगत् को पाप-ताप से निकालकर ऊपर लाना है। उनके लिए सादगी और सच्चाई की बहुत जरूरत है। जो मेरे इन वचनों को जीवन में धारण करेगा उसका उद्धार हो जाएगा। सेवा करो, जो परहित के लिए जीता है, जो परहित में समय बिताता है उसका आना सकारथ होता है। परहित से जीव की आँखें खुलती हैं। परहित से ही जीव की जंजीरें खुलती हैं। उल्टी शक्तियाँ मेरे कार्य में बाधा डालने का पूरा जतन कर रही हैं लेकिन जितना जोर लगाती है उतना सत् का कार्य बढ़ता है। उल्टी शक्तियों से डरो नहीं। माँ साथ हैं तो डर भी काहेका। मैं साथ हूँ तो डरो नहीं। होने दो जो कुछ हो रहा है। परमेश्वर के कार्य में कोई बाधा नहीं डाल सकता है। बाधा कुछ समय के लिए ऊपर आती है परन्तु अन्त में उनका नाश होता ही है। दुष्टों का नाश होगा भक्तों की रक्षा होएगी परन्तु कभी किसी का बुरा सोचना नहीं। मुझ पर सदा भरोसा रखो।

ईश्वरीय नियमों को कभी तोड़ना नहीं। सबका भला माँगो। सबके लिए सद्‌बुद्धि माँगो। मैंने यहाँ से सर्व जगत् को प्रकाश देना है। देखते जाओ क्या होता है। धीरे-धीरे प्रचार का कार्य बहुत बढ़ते जाएगा। देश के कोने-कोने में ही नहीं विदेशों में भी जाएगा। जब सत् की आवाज जगत् में गूँजेगी तभी असत् का नाश होगा।

ईश्वर के कार्य में बदी की जगह नहीं होती। धीरे-धीरे प्रचार का कार्य बढ़ते चले जा रहा है। लोगों को इसमें सच्चाई दिखने लग पड़ी है। हज़ारों लाखों लोग इस सच्चाई को अनुभव करने लग पड़े हैं। उल्टी शक्तियाँ मन को उदास करती हैं। जितने कष्ट आएँ उतने उत्साह से सेवा करो। ईश्वर दुष्टों को लम्बी डोर देते हैं। एक दिन उनका कटोरा भर जाता है। जिनके कटोरे भर जाते हैं उनको दंड देते हैं। अपने बच्चों को, अपने भक्तों को अमृत पिलाऊँगा खोटे कर्म करने वाले का नाश करूँगा। जो ग्रंथों का रोज पारायण करता है उसकी रक्षा होती ही है। सत्‌मार्ग पर चलने से जीव पक्का होता है। हराम की कमाई से बाज आ जाओ। हराम की कमाई जीव को खा जाती है। लाखों जन्म बर्बाद कर देती है। हर काम अच्छा बुरा देख कर करना चाहिए। पाप कर्म से भयानक दु:ख होता है। ये मानव चोला कर्म खतम करने के लिए मिला है। नए कर्म खड़े नहीं करना चाहिए। हर बार जब तुम मंत्र जाप करते हो हर एक मंत्र के साथ कुछ न कुछ कर्म कम हो जाता है। भगवान दत्तात्रय जी की भक्ति सबसे ऊँची भक्ति है। सच्चे मन से दत्तात्रय उपासना में लग जाओ। तुम्हारा बहुत ही कल्याण होगा। भगवान दत्तात्रय ब्रह्म बुद्धि के दाता है, जीवों को सतबुद्धि मिलती है। **ॐ साईं दत्तात्रय नमः**। इस मंत्र का उच्चारण करने से जीव में धीरे-धीरे जागृति आ जाती है।

"जै मैय्या"

सुख स्वरूप भक्ति जहाँ वहाँ क्रोध नहीं काम ।
सिमरन कर लो साईं का यही तुम्हारो काम ।।
मन मन्दिर साईं बसें सभी अमंगल जाएँ ।
प्रेम भाव से जो भजें ता को पार लगाएँ ।।

श्री साईं गीता।।१२९१।।

फ़कीर का वरदान

फ़कीरी

अमृत पीना है, तो अंदर आओ। बाहर राग द्वेष भरा है। बाहर रहने की जगह नहीं है। अंदर दया है, सच्चा प्यार है। अंदर एकता है, आनंद है, सुख, चैन, शांति है। बाहर बड़प्पन है, अहंकार है, झूठी शान है। ये बाहर की दुनियाँ रहने लायक नहीं है। जीवों को कितना भी समझाओ, वो अपनी करनी से बाज़ नहीं आते। सत् पुरुषों के साथ रह कर भी नहीं समझते। जब तक हमारा प्रेम भरा संसार नहीं होता, हमारा जीना ना जीने के बराबर है। हमने प्रेम करना सीखा नहीं। **यदि हम दूसरों को कड़वे शब्द बोल रहे हैं, तो दूसरों का दिल दुखाते हैं। दूसरों का दिल दुखाना भगवान का दिल दुखाना है। कभी किसी का दिल मत दुखाओ। सबसे मीठी बात करो सबकी इज़्ज़त करो। सबको साईं रूप जानो। सबमें एक साईं की ज्योत है।** जो दूसरों को बुरा समझता है वो अपना जन्म-मरण खराब कर देता है। संसार में रह कर जीव अपना भला कर नहीं सकता। सबको नारायण रूप जानो तभी तुम्हारा उद्धार होएगा। अपने को भूल कर भी बड़ा मत समझो। सदा अपने को सबकी चरण धूल समझना। दूसरों को मान दो, सत्कार दो, सबसे प्रेम करो। कभी भी अपने लिये मान मत चाहो। प्रेम भरा संसार होना चाहिये। **संसार से प्रेम नहीं किया तो भगवान से प्रेम का सवाल ही नहीं है। यदि जगत् प्रेम भरा नहीं तो भगवान को कैसे पाएँगे।** सभी बराबर हैं। सभी में एक ज्योत है।

अपने विकारों को सदा देखो। अवगुण सदा अपने देखो। दूसरों के गुण देखो।

अहंकारी जीव अनादर करता है। जो बच्चा बन गया है वो कैसे किसी को बुरा समझेगा। सब तो माई रूप है। माई का भजन करने का केवल वो ही अधिकारी है जो सबमें एक माई की ज्योत देखता है। बच्चा माँ का रूप होता है। बच्चा सबकी सेवा करता है। बच्चा सबसे प्रेम करता है। बच्चा सबको आदर देता है। बच्चा सबका भला चाहता है। बच्चे के साथ कोई बुरा करता है, तो बच्चे को बुरा नहीं लगता। ये ही बच्चे के गुण हैं। जीवन ही सब कुछ है। जीवन देने का मतलब ये है, भूल कर भी किसी का निरादर नहीं करना। सबकी सेवा करना। बच्चे बनो, बड़े मत रहो। जहाँ प्रेम है वहाँ भगवान हैं। जहाँ नफरत है वहाँ शैतान है। जहाँ शान्ति है वहाँ भगवान हैं। जहाँ अशान्ति है, वहाँ शैतान है। शांत मन में ही राम बसते हैं। अशांत मन रावण का घर है। संसार में अपने ऊपर कुछ भी आये, अपने मन को अशांत नहीं करना चाहिये। हमारी शान्ति कभी भंग नहीं होनी चाहिये। भूल कर भी किसी का मन मत दुखाओ ये ही आध्यात्मिक जीवन है। सदा दूसरों को प्रसन्न रखो। दूसरों का दिल दुखाना ये असुरों का जीवन है। धर्म के रास्ते चलो। अधर्म से दुख होता है। धर्म वो ही कमाता है, जो दूसरों की सेवा करता है। अधर्म वो कमाता है, जो दूसरों को अशांत करता है। **हम बाबा साईंनाथ के बच्चे तभी हैं, जब हम हर प्राणी के अंदर अपने प्यारे बाबा को देखते हैं। किसी के साथ ऐसा व्यवहार मत करो जिससे उसको धक्का लगे। हमारा काम है सबकी सेवा करना। सबकी खुशी लेना। हमारा व्यवहार सदा ऐसा होना चाहिये जिससे हमसे सब सदा खुश रहें।** ये लाईन करोड़ो बार पढ़ो क्योंकि सबके अंदर हमारे प्यारे बाबा है। सत्पुरुषों की संगत उसी ने की जो सदा दूसरों के काम आता है। मेरे बच्चे जगत् में जहाँ भी होते हैं। दूसरों को सुख देते है, आनंद देते हैं। जहाँ पर उनको दुख दिखता है, उनका मन पिघल जाता है। बाबा सर्व जगत् सुखी रहे, बाबा किसी पर दुख ना आये। हर प्राणी सुखी रहे। कोई गाली भी दे पत्थर भी मारे तो भी प्रार्थना करते हैं बाबा आपकी माया में पड़ कर ये जीव गलती कर रहा है। बाबा इसे माफ कर दो। मेरे बच्चे सृष्टि का श्रृंगार होते है जिस मन में क्षमा है वहाँ सोयम् बाबा बैठे है। हमारे

साथ कोई बुरा करे और फिर भी हम बाबा से क्षमा माँगते हैं, वहाँ बाबा आप हैं। इसी बात को समझना है।

मेरा खेल समझने की शक्ति मनुष्य बुद्धि में नहीं है। मेरा खेल गुप्त है। अपार है। मनुष्य बुद्धि उसे जान नहीं सकती इसलिये शरणागति की जरूरत होती है। शरणागति से ही जीव अंदर के मर्म जान सकता है, जो बाहरी दुनियाँ में रहता है। वो मेरे खेल को कैसे जान सकता है। अमृत पीना है तो अंदर आओ। बाहर माया है झुलसा देने वाली है, अहम में रखने वाली है, अनेकता में रखने वाली है, अंदर में मैं तुम्हारी माँ हूँ। तुम्हारे अपने बाबा हैं। कोटि-कोटांग जगत् का रक्षक अनंत ईश्वर मैं आप हूँ। मेरे खेल को कौन जान सकता है। माया जीव को मुझसे अलग कर देती है परन्तु मेरे बच्चे मेरे चरण कमलों को मजबूती से पकड़ कर रखते हैं। माया मेरे मासूम बच्चों का कुछ बिगाड़ नहीं कर सकती। जगत् में मेरा खेल हो रहा है। जीवों को चाहिये मेरा खेल समझें। ये शरीर क्या है ये मन की स्थितियाँ क्या हैं? आज यहाँ कल वहाँ, इन स्थितियों से परे, मुझ अविनाशी में बास करो। मैं ही सब जीवों का सब स्थितियों का स्वामी हूँ। जो मुझमें बास करता है माया उसका कुछ बिगाड़ नहीं कर सकती। जो सच्चे मन से एकांत में रह कर मेरा भजन करता है, माया उसका कुछ बिगाड़ नहीं कर सकती। जगह-जगह पर लोगों ने ढ़ोंग बना लिया है कुछ तांत्रिक विद्यायें रची हैं ऐसे तांत्रिक लोगों को मैं घोर नरक में डाल देता हूँ। मेरे बच्चों पर तांत्रिक भी जोर नहीं मार सकते। जो दूसरों के लिये गड्ढा खोदता है, वो खुद उसमें गिर जाता है।

कर्मों से घबराओ नहीं जब मैं तुम्हारे साथ हूँ तो डर काहेका। तुम अपनी चिंताएँ मुझे दे दो मैं चिंताएँ नहीं लूँगी, तो मैं माँ कैसी? गरीबों की ही माँ होती है। गरीबी में ही भगवान है। अमीरों ने आज तक भगवान को नहीं पाया ना अमीरों को भगवान मिला। मैं बाबा साईनाथ बोल रहा हूँ। अमीरी लाख लानत है। धन्य है वह गरीबी जहाँ माँ आप हैं। जो इसको नहीं समझता वो लाख जन्मों में भी मेरे निकट नहीं आ सकता। मुझे आप लोगों को सच्चाई देनी है। ये बच्चा निराश हो कर कह रहा है, क्योंकि ये जानता है कि तुम में से एक भी ये बात ग्रहण

करने को तैयार नहीं। इसे सब मालूम है, तुम लोग अमीर बनना चाहते हो। सबको अमीरी चाहिये पर क्या करूँ। मैंने इस बच्चे को सच्चाई की आवाज़ उठाने के लिये इस जगह पर बिठाया है। ये दबी आवाज में कैसे बोल सकता है। सच्चाई दब नहीं सकती। इसको कई लोग दबाने की कोशिश करते हैं, लेकिन ये सत् की आवाज सौ परदे फाड़ कर भी निकलेगी ही। मुझे भी अच्छा नहीं लगता कि आप लोगों में से कईयों को बुरा लग रहा है। इसके अंदर से मैं सेवा करती हूँ। माँ बोल रही हैं, ये बाकी चीजें ग्रहण कर लेंगे परन्तु ये चीज ग्रहण नहीं करना चाहते।

आज मैं तुम लोगों को सुबह से अमृत पिला रहा हूँ। मैं जगत् में फकीरी भी बाँटता हूँ और अमीरी भी बाँटता हूँ। परन्तु मेरे इस दरबार से हरगिज़ कभी भी अमीरी नहीं बाँटूगा। मैंने इस जगह से बहुत कुछ दिया भरपूर दिया और दूँगा परन्तु अमीरी नहीं दूँगा। मैं यहाँ से फकीरी बाँटता हूँ। फकीरी लेने को तैयार हो क्या? ये जवाब पूछता है, तैयार हो क्या? ये फिर निराशा से पूछते जा रहा है। ये बच्चा अंतरयामी है, सबके मनों को जानता है किसके मन में क्या चल रहा है। बाहर से बताने की जरूरत नहीं ये त्रिकालदर्शी है। बाबा इनको धन-दौलत छोड़ने को बोलते हैं, ये लोग सुनना नहीं चाहते। यदि ये नहीं सुनना चाहते, तो जाओ, झूठ के द्वार पर। यहाँ सच्चाई का सौदा दिया जाता है। इनको कड़वा लगता है। बाबा आप ही समझाओ आप समझा सकते हो। कह रहे है माया के मामले में कोई नहीं सुनता। एक ओर माया है, एक ओर भगवान है। माया को ले सकते हो या भगवान को ले सकते हो। जीसस क्राईस्ट की वाणी है – तुम सुई के नाके में से ऊँट निकाल सकते हो परन्तु एक मायावी जीव को माया से निकालना ये नहीं मान सकते। मैं नहीं चाहता इसके मन को ठेस लगे। जब कोई इसके मन को ठेस लगाते हैं, तो मुझे बहुत धक्का लगता है। मैं इसमें हूँ, ये मुझमें है, जो इसको निराश करता है, वो मुझे निराश करता है। जो इसे ठेस पहुँचाता है, वो मुझे ठेस पहुँचाता है। जो इसका निरादर करता है वो मेरा निरादर करता है। ये मुझमें है मैं इसमें हूँ, कल्पना मात्र अलग है, हैं एक।

आजकल माया का इतना जोर है, कि अच्छे-अच्छे साधक हिल जाते हैं। भटक जाते हैं। जहाँ पैसा देखते हैं, हिल जाते हैं, भटक जाते हैं, पागल हो जाते हैं। ऐसे रंग-बिरंगियाँ किस काम की। सत् की वाणी पर पूरा विश्वास करना ये ही पार होने की निशानी है। सत् की वाणी हमें अमृत लगनी चाहिये। सत् की वाणी में गोते लगाना चाहिये। सत् की वाणी पूरण की वाणी है। सत् की वाणी ईश्वरीय वाणी है। सत् की वाणी को कोई झुठला नहीं सकता। सत् की वाणी हमारे मन-बुद्धि को पकड़ लेती है। सत् की वाणी हमें माया से निकाल कर आदि-अनादि शक्ति में लीन कर देती है। सत् की वाणी हमें हृदय में बसानी है। सत् की वाणी को सत् का रूप जानना चाहिये। सत् की वाणी में कभी शक-शुबह नहीं लाना चाहिये। हुक्म में रहने से ही सब कुछ मिलता है। जो हुक्म में रहते हैं वो सब कुछ पाते हैं। जो हुक्म में नहीं रहते वो सब कुछ गँवा देते हैं। इस बात को अच्छी तरह से समझने का है।

" जै मैय्या "

तीन खम्बों पर खड़ा सारा जगत् ।
सत्य दया और प्रेम ये वेदों का मत ।।
ईश्वरीय शक्ति को देख इन तीन में ।
तीनों बसत हैं दीन में मस्कीन में ।।

श्री साईं गीता।।१२४९।।

झूठे है धन माल सब झूठो है घर बार ।
झूठे हैं ये नाते रिश्ते झूठो है संसार ।।
झूठे हैं ये संगी साथी झूठा इनका प्यार ।
साचा केवल एक है साहिब का दरबार ।।

श्री साईं गीता।।१२५१।।

दुःख देवे अधर्म कमाई

जो सच्चे मन से पूर्ण पिता परमेश्वर का हो जाता है उसकी पूर्ण रक्षा होती ही है। जो सच्चे मन से मेरा हो चुका है उसको काहे का डर। कर्म की पूर्ति में भी काहे का डर। कुछ तकलीफ, कुछ कष्ट हो रहा है तो सह लो, माँ साथ है तो बिगाड़ किसका! चिंता नहीं करो मेरे जन की हानि कभी नहीं हो सकती। दुःखों में शिकायत ही मन में क्यों लाना किसी दूसरे के कर्म बाबा नहीं दे रहे हैं। दुःख आये हैं तो सबक सीखना है कि आगे के लिये कोई ऐसा गलत कर्म ना होवे। **पाप की कमाई घर में आई है तो पहले उसको निकालो फिर डॉक्टर की शरण लो। पाप की कमाई घर में रख कर डॉक्टर के पीछे जाना महामूर्खता है। जब तक पाप की कमाई घर में रहेगी डॉक्टर क्या डॉक्टर का बाप भी कुछ नहीं कर सकता। इन चीज़ों को अच्छी तरह से समझना है।** भजन करो परन्तु निष्काम भजन करो। भगवान की प्राप्ति के लिये भजन करो। कोई दूसरा विचार मन में मत रखो। अपने आप को अर्पण करो। सुख-दुःख जो आये माँ का प्रशाद समझ कर ग्रहण करो। माँ अपने बच्चों की रक्षा नहीं करेगी तो कौन करेगा। मैं उनकी रक्षा नहीं करूँगी तो कौन करेगा। फायदा क्या है नाम लेने का? किसी भी कीमत पर सच्चाई को छोड़ो नहीं। जिस पल जिस स्थिति में सच्चाई हमसे छूट गई, उसी पल आगे दुःखों का बीज उग गया, उसी पल दुःखों का बीज हमारे जीवन में बोया गया। आगे जाकर रोने से क्या फायदा। सच्चाई को छोड़ा तो हमने दुःखों की शरण ली। सच्चाई छोड़ी तो कोई तुमको दुःखों से नहीं छुड़ा सकता। बचेगा वो ही जो सच्चाई में रहेगा। सत् में रहेगा। अपने सत्गुरु की सच्चे मन से शरण में रहेगा वो ही बचेगा दूसरा कोई नहीं बच सकता। कभी भी किसी भी कीमत पर सच्चाई को नहीं छोड़ना है, अपराध हुए हैं जीवन में। बड़ा बनने में कुछ नहीं है। बड़ा

बनने में लाख लानत है। महाराज ने सेवा के लिये इस जगह पर बिठा दिया है। अपने अंदर ऐब है काहे को दुनियाँ के पीछे भागेंगे। अपनी कमजोरी सामने रख कर फिर उस परमेश्वर के सामने क्षमा माँगना। अहम् से सौ गलतियाँ दिन में होती ही रहती है इन चीज़ों को अच्छी तरह से समझने का है। मैंने दुनियाँ में, इस जीवन में कितने अपराध किए हैं और कर्म भी भोग रहा हूँ और जम के भोग रहा हूँ। ये है दया पाने का रास्ता। अपना हिसाब-किताब चुकाओ और दया को पा लो। कोई भी अपने कर्मों से बच नहीं सकता है। इस बात को समझने का है। कभी भूल कर भी अपने को दूसरों से अच्छा नहीं समझना। जब हम अपने को दूसरों से अच्छा समझते हैं तो उसी पल गिरते हैं गड्ढे में। एक मनुष्य जब दूसरे मनुष्य के ऐब देखते हैं तो हमारे सब शुभ कर्म धुल जाते हैं। इस बात को समझने का है। सच्चाई ही ईश्वर है, परमेश्वर है। एक भी झूठा कर्म किया तो हम उसके दण्ड से बच नहीं सकते। इस बात को समझने का है। जहाँ से भी कुछ सीखने को मिले सीखना चाहिये। **अध्यातम् के रास्ते में सबसे बड़ा गुण है दीनता।** अपने को दीन करके मानना है। कभी भी अपने को ऊँचा नहीं मानना। कर्म की गति उसकी ढीली हो सकती है जो दीन है। जो चरणों में पड़ा हुआ है उसके ऊपर हंटर चल रहे हैं पर उसको नहीं लग रहे हैं। दीनता में इतना बड़ा भारी गुण है। कर्म की गति भी ढीली पड़ जाती है। दूसरों के ऐब देखने लगे तो समझो हमारा समय आ गया है। हमारे सब शुभ कर्म जलते जा रहे हैं। नहीं तो अपने जन्मों की कमाई को जीव गंवा देता है। इन चीज़ों को अच्छी तरह से समझने का है। दीनता में ईश्वर की दया छिपी हुई है। दीनता में ईश्वर की दया भरी हुई है। इस बात को अच्छी तरह से समझने का है। अपराधी कौन है? जो अपने को बड़ा मानता है। दया किसको मिलती है? जो दीन होकर रहता है। ऐसा क्यों? जो अपने को बड़ा मानता है वो अपने पैरों से दूसरों को कुचल देता है ये सबक सीखने का है। तभी साधना हमें सफलता देगी। इस बात को समझने का है।

साईं राम कृष्ण गोविन्द हरि ।
साईं मात भगवती परमेश्वरी ।।

गुरु भक्ति क्या चीज़ है फिर बाबा दामोदर दास जी की बात याद आ रही है। जिसको गुरु कृपा मिल जाती है, सच्ची गुरु कृपा मिल जाती है उसको सब कुछ मिल जाता है। गुरु ईश्वर हैं और कोई गुरु नहीं हो सकता। तुम्हारे सबके लिये सच्ची गुरु सेवा सच्चाई का प्रचार है। सच्चाई का प्रचार करोगे तो तुम्हारा जीवन धन्य हो जायेगा। ये ही समझने का है। गुरु भक्ति हमारे मन से गई हमारा सब कुछ लुट गया। हमारा कुछ नहीं बचा। इन चीज़ों को अच्छी तरह से समझने का है। आज भाई दूज का दिन है। बहन अपने भाई के साथ अपना रिश्ता नये सिरे से मजबूत करती है। हमारा सब कुछ हमारे बाबा हैं हमारे माता, पिता, बंधु, गुरु जो कुछ हैं हमारे बाबा हैं। हमने अपने बाबा के साथ नाता मजबूत करना है। उस नाते को जोड़ना है और रिश्ता मजबूत करना है। बाबा के चरण-कमलों को टीका लगायेंगे, बाबा की खड़ाऊँ को टीका लगायेंगे।

" जै मैय्या "

और चाहिए की बीमारी ये है भयानक रोग ।
ये भी चाहि वो भी चाहिए चाहिए सब ही भोग ।।
एक ईश्वर चाहिए नाहीं जो साचा हितकारी ।
बड़े भाग्य ये चोला पाया फिर ये बाज़ी हारी ।।

श्री साईं गीता।।११९०।।

जो जन पाप कमाई करता अपना वैरी आप ।
सुख शान्ति वा को मिले जो होए निष्पाप ।।
पाप कर्म दुख देत हैं सुख देवें शुभ कर्म ।
कर्तापन को छोड़ना सबसे ऊँचा धरम ।।

श्री साईं गीता।।११९४।।

श्री साईं गीता सिखलाती है

उल्टे दिन जब आएँ जन के तब ही लेत उधारी ।
इच्छया में जो रहें नहीं अंत में होए ख़्वारी ।।
और चाहिए और चाहिए की है लगी बीमारी ।
सादा रहनी से है मन में होए शुक्रगुज़ारी ।।

श्री साईं गीता।।२०२।।

प्यार कर प्यार कर सबसे हो सच्चा प्यार ।
साईं दया से हो जाए तू ये भवसागर पार ।।
प्यार से तरे हैं बाबा के सब ही भगत् ।
प्यार भरा तन मन हो साईंमय हो जगत् ।।

श्री साईं गीता।।१२१०।।

जमा कर ले जमा कर ले तू सोहम् का खज़ाना ।
स्वासों स्वासा नाम ले बन नाम का दीवाना ।।
अन्त समय में नाम बिना कछु भी काम ना आना ।
नाम के प्रताप से पावै श्री भगवाना ।।

श्री साईं गीता।।१२१४।।

मन मैला और कपड़े उज्वल बात बने ना भाई ।
जो मन मैला धोना चाहे नाम की करै कमाई ।।
साचे गुर की शरण में आओ वो घट में करें धुलाई ।
अंतकाल सब ही तज जावें नाम ही होए सहाई ।।

श्री साईं गीता।।१२२३।।

कर्ता

साईं जान

पाप कर्मों से कोई अपने आप बच नहीं सकता है अर्पित होने की जरूरत है। जिसके हम अर्पित हो जाते हैं वो पाप कर्मों से हमें बचाते चले जाता है। जब हम ईश्वर की इच्छा में ही रज़ा मनाते हैं तो गल्ती की कोई जगह ही नहीं रहती। एक का खेल होने देना है। इसी में सारा अंध्यातम् आ जाता है। इसी में सब कुछ आ जाता है। यदि एक की इच्छा में रह रहे हैं तो बाहर में जो हो रहा है वो होने दो। कर्म पूरे होने लाजमी हैं। दुःखों से डरो नहीं, तकलीफों से घबराओ नहीं। जितनी परेशानियाँ आती हैं वो हमारे लिए आनंद के नए द्वार खोलती हैं। कर्म भोग में ही जीव का कल्याण छिपा है। एक बार कर्म पूरे हो जाएँगे तो फिर सदा के लिए आनंद ही आनंद की स्थिति हो जाएगी। जैसी करनी वैसी भरनी। तुम्हारे ही कर्म तुम्हें पूरे करने को लगाता हूँ। ईश्वर की रज़ामंदी में जो भी कार्य किए जाएँ वो मंगलकारी हैं। ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध जो भी कार्य किया जाएगा वो अमंगलकारी है। बाहरी जीवन में कई ऐसी स्थितियाँ आती हैं जब मंगल अमंगल देखना होता है, संन्यासी के लिए कोई ऐसी स्थिति आती ही नहीं। अपनापन गिरा देता है। अपनेपन से ही जीव गिरता है। सब मेरा खेल है और मेरा खेल खेलते जाओ। मैं न कुछ कर सकूँगा, न कर सकता हूँ न कर सका हूँ सब तेरा खेल है माँ।

भगवत अर्पित जीवन जैसा कोई जीवन नहीं जिसमें निजी इच्छा, निजी वासना की जड़ उखड़ जाती है। जो हरि इच्छा में रहते हैं वो आनंद लेते हैं। जिस रास्ते जाना ही नहीं उस रास्ते की ओर देखना ही क्यों। आनंद की स्थिति केवल उसी की बनती है जो वासनाओं का त्याग कर देता है। भगवान का नाम लेते जाओ। डरो नहीं कुछ नहीं होगा। भगवान के नाम में बड़ी भारी शक्ति है जो जन को निर्मल बना देती है। हर जगह एकता का खेल देखो शांत रहोगे। एकता और पूरनता ही हमारी मंजिल है। इस सच्चाई को पल-पल जीवन में दृढ़ करते चले जाना

है। कर्म जोर मारे तो घबराना नहीं माँ साथ हैं तो डर भी काहेका। अपनी करनी पर कड़ी नज़र रखना चाहिए। हर कर्म सोच समझ कर करना चाहिए। कर्तापन अपने अंदर से निकाल लेना चाहिए जल्दबाजी में कोई कर्म नहीं करो। किसी के कर्म ठीक कर देने में मदद कर देना ऐसा कोई पुण्य कर्म हो ही नहीं सकता। लोग बदी से बाज़ आ जाएँ, झूठ से बाज आ जाएँ, छल कपट से बाज़ आ जाएँ ये ही तो करना है। ईश्वर चिंतन और ईश्वर अर्पित जीवन ये दो बातें हमारे जीवन में आ जाएँ तो हमारा जीवन धन्य हो जाए। बाहरी जीवन में नाम से शांति मिल सकती है। सच्ची शांति तो अपने घट में है। अपने सच्चे घर में वास करने का जतन करो, वो तभी कर सकोगे जब तुम संसारी लोभ-लालच से ऊपर उठोगे। भगवान की पूजा-पाठ, ध्यान-धारणा में कभी सुस्ती नहीं करनी चाहिए। सुबह जल्दी उठना चाहिए, भजन होना लाजमी है। ईश्वर अर्पित जीव की पूरी रक्षा होती है। अर्पित जीव को किसी प्रकार की चिंता करनी बनती ही नहीं है। अर्पित जीव का रखवाला मैं हूँ अर्पित जीव की पूरी रक्षा होती है। बच्चे की रक्षा माँ नहीं करेगी तो कौन करेगा। अर्पित जीवन की महिमा यदि जीव समझ ले तो जीव भूल कर भी माया की तरफ न जाएँ। अर्पित जीव को चिंता जरा भी करनी नहीं बनती। अगर मैं अर्पित जीव की रक्षा नहीं करूँगा तो मैं खुद ही बोलूँगा मेरा भजन मत करो, मेरा भजन करना बेकार है बेटे। जो मेरे अर्पित रहता है उसके कदम के साथ कदम मिला कर चलना पड़ता है वो हमारा बच्चा है उसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। जब तुमने एक मेरा आधार लिया हुआ है तो मैं कैसे तुम्हें त्यागूँ? एक पल के लिए भी नहीं छोडूँगा। कर्म जरूर पूरे करवाता हूँ परन्तु रक्षा पूरी करता हूँ। अर्पित जीव को चिंता कभी नहीं करनी चाहिए। चिंता को छोड़ चिंतन में रहना चाहिए। जो सदा मेरी इच्छा में रहता है उसका बिगाड़ कैसे हो सकता है? मनुष्य भले ही कितना ही अच्छा क्यों न हो, कितनी ही ऊँची समझ क्यों न हो, कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो यदि एक मनुष्य गुरु बन के बैठ जाता है तो इससे बड़ा ढोंग और कोई नहीं हो सकता है। गुरु केवल ईश्वर हैं अपने चुने हुए चोले से सोयम् अपना कार्य करते हैं। उस जीव को बड़ा बना देते हैं। अपना कार्य आप करते हैं। सबसे बड़ा ढोंगी जगत् में कौन है – वो मानव है

जो अपनी मर्ज़ी से गुरु बन कर बैठ गया है ऐसा जीव सीधा के सीधा नरक में जाता है। एक जीना दिखा रहे हैं कुछ जीव चढ़ना चाहते हैं ऊपर की कुछ सीढ़ियाँ है कुछ नीचे की, बीच की सीढ़ियाँ नहीं है लोग सोच रहे हैं कैसे ऊपर चढ़ें। एक पायरी पर लिखा है **सादगी**। लोग रुक गए बाबा देख रहे हैं दूसरी पायली लगा दिया लिखते है **सच्चाई**। तीसरी लगाई **धर्म** की। चौथी लगाई **परहित** की, पाँचवी लगाई **अर्पित जीवन** की। यहाँ गुरु की जरूरत होती है। गुरु ने सीढ़ियाँ लगा दिया चढ़ना तुम्हारा काम है। एक आदमी अधूरे मन से चलना चाहता है नीचे में खतरा है, फिर गिर जाता है। मजबूत हाथों से पकड़ता नहीं। बाबा बोलते हैं रूखी-सूखी खा अल्लाह का लाख-लाख शुक्र कर पार हो जाएगा। कर्म करके कोई छूट नहीं सकता। कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। बिना परहेज़ किए बात बनती नहीं है। तुम मेरे होकर जीवन का सफर तय करो मैं आखरी समय तुम्हें बचाने आ जाऊँगा। जो सच्चे मन से साईं का हो जाता है साईं उसके हो जाते हैं। जो साईं चरणों में पहुँच गया उसको साईं मंझधार में नहीं छोड़ते, पार लगाकर ही छोड़ते हैं। साईं आसानी से अपनाते नहीं है। एक बार अपना लिया तो पार लगा कर ही छोड़ते हैं। जो परपीड़ को अपनी पीड़ करके जानता है उसी ने सच्चाई को जाना है। क्योंकि आत्मा सभी में एक ही है। अमृत पीना है तो घट में आना ही पड़ेगा। घट में आने के लिए अंतःकरण शुद्ध होने की जरूरत है। साधना निर्मल शुद्ध निष्पाप होना चाहिए। निष्पाप जीवन के बिना न यहाँ सुख है न आगे सुख है। कर्म का फल तो भोगना ही पड़ता है। वो जीवन भी किस काम का जो भगवान को छोड़कर विषय-वासना में गुजरे। जो दूसरों का हित करने के बजाय अहित करने में जाएँ। जितना अधिक पाप उतनी ही आगे खराब गति। रक्षा चाहते हो तो बच्चे बन जाओ। कौन माँ है जो अपने बच्चों की रक्षा नहीं करती? बच्चा कौन है जो सरल स्वभाव है। बच्चा वो है जिसको एक माँ के बिना कुछ होना नहीं। माँ को छोड़कर कुछ होना तो छल कपट बीच में आता ही है। जीवन निर्मल करो, कमाई शुद्ध करो, दूसरों का खाओ नहीं। Life is fleeting we are nearing day by day एक ही शक्ति, एक ही सत्ता से काल हाथ बढ़ा-बढ़ाकर एक-एक को ले रहा है। पीछे अंतरंग से कोई बोल रहा है अपनी-अपनी साधना पूरी कर लो ताकि छुटकारा हो जाएँ। अपना हिसाब चुका लो। नहीं तो नरक के अंगारे

दिखा रहे हैं उसमें जाना पड़ेगा।

ईश्वर मिलन में बाधाएँ है वासनाएँ। जब कोई भी आदमी ईश्वर को छोड़कर किसी वस्तु पाने के लिए वासनाएँ उठाता है वो ईश्वर से अलग हो जाता है। पाप कर्म करता है। दल-दल में कीचड़ में फँसता जाता है। साधना, उपासना के साथ-साथ शुद्ध, पवित्र, निर्मल जीवन। जब तक ये नहीं होगा हमारा जीवन शांत नहीं हो सकता। हमारे जीवन में शांति तभी आ सकती है जिसने दूसरों को शांत किया है। तुम जखीरे को आग लगा लो नहीं तो जखीरा तुम्हारे जीवन में आकर लाखों जन्मों तक आग लगाते जाएगा।

माँ का नाम लेने वालों! जो कुछ उल्टा सीधा आया है उसको निकाल कर जाओ। अमृत पिलाने आया हूँ तुम हाथ छुड़ा-छुड़ा कर भागते हो, जहर पीते हो, सद्गति कैसे होगी। अमृत पीओगे तो अमर हो जाओगे। जहर पीओगे तो अमर कैसे होओगे। सेवा करो जितनी सेवा कर सकते हो। सत्सेवा में अपना पूरा जीवन व्यतीत करो। सच का प्रचार करो। सत्नाम जपो, और दूसरों से भी जपाओ। ऊँच नीच को छोड़ कर सब जगह एकता को देखते हुए मुझ पूरन का भजन करो, सब प्राणियों में एक मैं ही समाया हुआ हूँ। ऐसा जो अनुभव करता है वो मुझे पा लेता है। जो सब प्राणियों में मुझे देखते हुए सबसे सच्चा प्यार करता है, सबको सुखी बनाता है उसी ने परम तत्व को जाना है। जो दूसरों को सुखी बनाने में लगे रहता है उसका उद्धार होने ही वाला है। जीवों में भी मुझे देखते हुए मेरी सेवा करो तुम्हारा उद्धार हो जाएगा। कल्याण हो जाएगा। जो कुछ है अविनाशी तत्त्व मैं हूँ। मेरे सिवा कुछ भी नहीं है। जगत् में मेरा खेल है, मेरे सिवाय कुछ भी नहीं है। मैं ही सब पुतलों में रमा हुआ हूँ। हर कर्म, हर विचार में मैं हूँ। जो मेरी महानता को अनुभव करता है वो पार होने ही वाला है। ऐसा जान कर ईश्वर की इच्छा में रहना हमारा परम धर्म है। मुझ से ही कोटि-कोटांग ब्रह्मण्ड उपजे हुए है। मेरी इच्छा से चल रहे हैं। अंत में मुझ पूरन अविनाशी में मिल जाते हैं। मुझ ईश्वर के सिवा सब मिथ्या है। माया से बचे बिना दु:खों से बच नहीं सकते। माया से बचने के लिए एक साईं की शरण लो।

ॐ साईं रक्षमाम् ।। ॐ साईं पाहिमाम् ।।

"जै मैय्या"

जन रक्षक मेरे साईं

जब हम ब्रह्म बुद्धि में चलते हैं हर चीज़ ठीक पड़ती चली जाती है। कर्म जरूर पूरे होते हैं परन्तु रक्षा भी जरूर होती है। जब हम खोटी मनुष्य बुद्धि से करते हैं, तो सीधा भी उल्टा होना शुरु हो जाता है। मनुष्य बुद्धि का काम ही है अपना हित देखना। जब तक हम अपना हित देखते है तो बंधन में पड़ जाते हैं। अमृत पीना है तो पतित वासनाओं का त्याग करना पड़ेगा। जब तक वासनाओं का त्याग नहीं करेंगे तब तक हम घट में अविनाशी पद का अमृत नहीं पी सकते। एक माँ को, एक मुझ अनंत को पाने के सिवा दूसरी कोई इच्छा, कोई वासना अंतरंग में ना रह जाए। जो सच्चे मन से मुझ ईश्वर का आसरा लेता है उसकी बिगड़ी बनने ही वाली है। किसी भी चीज़ में अपनापन लाना पाप है। ईश्वर की इच्छा के आगे सिर झुकाओ सब ठीक हो जाएगा। एक मानव चोला मिला है कर्म भोगने के लिए। सुख की तलाश है तो घट में आओ। अमृत सागर में डुबकियाँ लगाओ। जिसने वासनाओं को त्याग कर दिया है वो मेरी मूरत है। लाखों बार आए लाखों बार गए हवस ने छोड़ा नहीं, जन्म-मरण का चक्कर चलता ही रहा। जब मैं अंग-संग हूँ तो डर भी काहेका। काली शक्तियों को मौका दे रहा हूँ लगा लो जोर फिर उनको खतम कर देता हूँ। उससे मेरे भक्तों को तकलीफ तो बहुत होती है परन्तु जगत् को बहुत बड़ा सबक मिलता है। एक दिन सब उल्ट खतम होने वाला है और आसमान साफ होने वाला है। भक्ति भाव से मुझे याद करते रहोगे तो कर्म फल का ज्यादा असर नहीं लगेगा। जनहितकारी मेरा नाम है अपने जन की रक्षा करना मेरा काम है। बच्चा बन कर जो जीवन व्यतीत करता है उसकी पूरी जिम्मेदारी मेरे पर रहती है। **तन सेवा में, मन भगवान में, ये आदर्श होना चाहिए**। जगत् में इस समय चारों ओर अंधकार छाया हुआ है। एक न एक दिन ये सेवा जगत् में अपना कार्य करेगी ही। प्रकाश देगी ही। देखते जाओ क्या होता

है। लोग सोचते है ईश्वर नहीं है इसीलिए खोटे पाप कर्म करते हैं। एक मैं ही अंतरंग में बैठकर सबके विचार देख रहा हूँ। **जो मेरे लिए संसार के मौज मजे का त्याग करते हैं उनका ऋण मैं चुका नहीं सकता।** जो जगत् में मेरा कार्य प्रचार करते हैं वो मेरी आत्माएँ है वो अंत में मुझमें मिल कर एक हो जाते हैं। कपटी जीव की बात कभी बनती नहीं है। जो मन में छल-कपट रख के ऊपर से कुछ भी बोलता है वो मिटने ही वाला है। धोखा किसके साथ कर रहे हो। निर्मल हो जाओ, पवित्र हो जाओ तो तुम्हारे पिछले पाप भी क्षमा कर दूँगा। अपनी खोटी करनी से ही हम अपना कर्म बिगाड़ देते हैं। जो सच्चे मन से मेरे अर्पित है उनकी रक्षा करूँगा। मैं उनको अमृत पिलाऊँगा। इस पल की चिंता करो, भविष्य की कौन जानता है। ये पल ईश्वर चिंतन में लगा, भविष्य की कौन जानता है। सदा हुक्म में रहने का जतन करना चाहिए। भगवान ने हमें जहाँ भी रखा है सेवा करने को रखा है। जो सेवा भाव को छोड़कर जो निजी हित ले आते हैं वो डूब जाता है। सेवा के कार्य में अपना पूरा मन लगाओ। जो अपना कल्याण चाहते हो तो संसारी धंधों को लात मार दो। सब कुछ साईं की देन है। **''जा को जो कुछ मिलत है साईं का उपकार।।''** बाबा अपनी मुट्ठी दे रहे हैं, जो मुट्ठी खोलता है तो कीमती से कीमती रत्न है। दूसरे के हाथ में, उसी से हैं फकीरी देते हैं। क्या बनना है। बच्चा बन कर उनकी गोद में समा जाना है।

जो दुःख आए सुख से सहना सोई सन्मति दीजै ।
चरण-कमल का लोभी भंवरा चरण कमल रस पीजैं ।।

जो अपने प्रियतम को पाने के लिए हर दुःख सहने को तैयार होता है वो ही माँ के चरण कमल का रस पाने का अधिकारी है।

'' जै मैय्या ''

ॐ साईं श्री साईं जै श्री साईं। ॐ साईं श्री साईं जै श्री साईं।
ॐ साईं श्री साईं जै श्री साईं। ॐ साईं श्री साईं जै श्री साईं।

परम् सुखम श्री साईं सेवा

राखन हारा सदा राखता है घबराने की कोई जगह नहीं है। सच्चे मन से सत्सेवा करते रहो सब ठीक हो जायेगा। समझने का है। सेवा के कार्य में बाधा नहीं आना चाहिये। सब कुछ हमारे ऊपर छोड़ दो, हम सब ठीक करेंगे। सच्चे मन से सेवा करते जाओ, अपना पूरा मन सेवा में लगाओ। जगत् को इस समय सेवा की बड़ी भारी जरूरत है बाकी छोटी चीज़ों की तरफ ध्यान मत दो, सच्चाई का प्रचार करो, सच्चाई का प्रकाश जगत् में फैलाना है अपनी पूरी दृष्टि उसमें लगानी है, बाकी दूसरी बातें बीच में नहीं लाना है, जिसका दरबार है वो देखेगा। ईश्वर का खेल हो रहा है होने दो। जो सच्चे मन से ईश्वर की शरण में आयेगा वो बच जायेगा दूसरों के बचने की कोई उम्मीद नहीं है। जगत् का मैला, कूड़ा, करकट धोना है अपनी पूरी वृत्ति उसमें लगाना है। जगत् का मैला धोने के लिये मैंने बहुत सामग्री दी है। अपनी पूरी दृष्टि उस तरफ लगानी है। दूसरी तरफ ध्यान मत दो। अपनी पूरी वृत्तियाँ सेवा में लगाओ। देखो चारों ओर क्या हो रहा है? सर्व जगत् में अंधकार है, हर कोई उलटी करनी में लगा हुआ है। नफरत और घृणा का बाज़ार भरा हुआ है। लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं। धनी लोग गरीबों का खून चूस रहे हैं, इस समय जगत् को प्रकाश देने की जरूरत है। सच्चे मन से सेवा करते जाओ।

माँ की भक्ति का प्रचार करना है। लोग जगत् माता को बिलकुल भूले बैठे हैं, माँ की भक्ति का प्रचार खूब जोरों से होना चाहिये। माँ की दया के बिना जीव का उद्धार नहीं हो सकता है। माँ-माँ ही होती है। माँ अपने बच्चों के अवगुणों को नहीं देखती, जो बच्चा बन कर माँ की उपासना करता है उसके अवगुण धीरे-

धीरे अपने आप ठीक हो जाते हैं। मुझे बार-बार ये ही कहना है सेवा की तरफ ध्यान दो, बाकी ये छोटी-मोटी चीज़े सब अपने आप ठीक हो जायेंगी। सेवा की तरफ अपना मन लगाओ हर एक को उत्साह दो, सेवा के लिये आगे बढ़ो। हर एक को दृढ़ कराओ। हर एक को सेवा में लगाया हुआ है। जो सेवा नहीं करता वो ढील कर रहा है। एक-एक स्टीकर, एक-एक पुस्तक देने की बड़ी भारी जरूरत है। एक दिन भी किसी का सेवा के बिना खाली नहीं जाने देना चाहिये। एक दिन भी किसी का सेवा के बिना चले गया तो अपनी सेवा में वो फेल हो गया है। तुम्हें जिस कार्य के लिये मैं यहाँ पर लाया हूँ वो फेल हो गया। ईश्वर की इच्छा को जो तोड़ देता है उसको मैं छोड़ूँगा नहीं। सेवा के काम में बाधा नहीं पड़ना चाहिये। मेरे को गलत कर्म नहीं होने देना है, उल्टे कर्म नहीं होने देना। जब तक यहाँ सच्चाई नहीं होगी बाहर सच्चाई का प्रकाश कैसे फैल सकता है। जब तक हम यहाँ पर ठीक नहीं होते तक तक सेवा का कार्य नहीं हो सकता है। गलत कर्म करने वाला मेरे को यहाँ नहीं रखने का है, समझने का है। ईश्वर के दरबार में कभी कोई गलत काम नहीं होना चाहिये। यहाँ गलत काम किया हुआ भयानक फल देता है। मैं जगत् को प्रकाश देने आया हूँ। जहाँ से मैं प्रकाश दे रहा हूँ वहीं पर ही अंधेरा होगा तो जगत् को क्या प्रकाश मिलेगा।

ॐ साईं लक्ष्मी नारायनी।
दुर्गा भवानी कालिके सुखदायनी।।

पूर्व जन्मों के शुभ कर्म जब उदय होते हैं तब ईश्वर का, सत् का संग मिलता है इसको गंवाओं नहीं, अपनी पूरी दृष्टि इस पर लगाये रखो। जो चीज़ हमारे बीच में बाधा डालती है उसको निकाल दो। हम ईश्वर को पाने को आये हैं। कोई दूसरी चीज़ बीच में नहीं आनी चाहिये। निकल जाना चाहिये, ये चौरासी का चक्कर बड़ा खराब है, बार-बार मैं ये ही समझा रहा हूँ, यह अवसर मिला है निकल जाओ। सेवा करो – अपने सुख और आराम को भूल जाओ। जगत् इतना दुःखी है हम कैसे आराम से बैठ सकते हैं। सच्चाई के मामले में किसी के साथ

compromise नहीं हो सकता, समझौता हो ही नहीं सकता है। भले ही कोई भी हो। सच्चाई की सेवा करनी है तो हर कर्म में सच्चाई देखनी पड़ेगी। जिन चीज़ों को हम छोटा समझते है तुम्हारी नज़र में वो मामूली हैं, ईश्वर की नज़रों में मामूली नहीं है, इन चीज़ों को अच्छी तरह से समझने का है। सच्चाई के जीवन से अपने आप खुशबू आनी शुरु हो जाती है। कुछ करना नहीं पड़ता है। सच्चाई का जीवन वो ही है जो सत् की सेवा में गुज़रे। सत्नाम, सत्कर्म, सत्संग, सत्गुरु ये चारों एक दूसरे के साथ जुड़े हुये हैं, इसको कोई अलग नहीं कर सकता है। इनमें से एक भी चीज़ अलग हुई तो बात बिगड़ गई।

भगवान अंतरयामी हैं जो जीव के हर विचार, हर भाव, हर करनी को देख रहे हैं। जीव इस सच्चाई को भूल जाता है इसीलिये खोटे कर्म करता है। हमने जो कुछ करना है अपने गुरु की आज्ञा में करना है। गुरु की आज्ञा भंग करने वाले का उद्धार कभी नहीं हो सकता है। जिसको सेवा दी गई है उसकी जिम्मेदारी है हर बात की, हर चीज़ की। उसको देखना है कोई भी चीज़ गलत ना होने पाये। ये जिम्मेदारी उसके ऊपर डाली गई है किसी भी कीमत पर वो जिम्मेदारी चुकानी है। सच्चाई का पल्ला कभी छोड़ना नहीं है। सच्चाई ही प्रकाश है। पहले खुद झूठ कर्म करना छोड़ो फिर जगत् में सच्चाई का प्रचार करो। **तुममें से कई सच्चे मन से सेवा में लगे हुये हैं, मुझे इस बात पर बड़ी प्रसन्नता होती है। जैसे कोई धंधेवाला अपने धंधे का ही सोचते हैं ऐसे ही तुम लोग दिन-रात सेवा का ही सोचते हो। बहुत झूठकार जगत् में किया है अब सत्कार करना चाहिये। जितने थोड़े से बीज बोए जा रहे हैं उससे लाखों जीवों का उद्धार हो रहा है। लाखों जीवों के जीवन में मैं परिवर्तन ला रहा हूँ। धीरे-धीरे ये बढ़ते चले जायेगा परन्तु तुम सबको उत्साह के साथ सेवा करनी है। ईश्वर के साथी हो, ईश्वर ने तुमको साथी बनाया है। देवी-देवता भी तरसते हैं कि हमको गुरु का संग मिले, साथ मिले, सेवा मिले।**

तुम क्या सोचते हो ईश्वर का कार्य कभी रुक सकता है क्या? ईश्वर का कार्य आँधी-तुफान की तरह बढ़ते जा रहा है। ये कार्य धीरे-धीरे तुफान

की तरह फैलेगा। अभी तो बीज बोए जा रहे हैं। जब फल उग जायेंगे तब तुफान उठेगा क्योंकि यह सब मुझ ईश्वर का है, किसी दूसरे मनुष्य का नहीं है। अंदर की कमाई शमशानी चीज़े जमा करने में खर्च मत करो। सावधान।

यदि तुम मेरी पूर्ण रक्षा चाहते हो तो इधर-उधर देखना बन्द कर दो। सत्स्वरूप ईश्वर को छोड़कर जो इधर-उधर जाते हैं फिर वो भयानक कर्म भोगते हैं। सत्स्वरूप ईश्वर का हाथ छोड़कर इधर-उधर मत देखो। सावधान रहने की जरूरत है। जब उनसे पूरी रक्षा हमें मिल सकती है तो फिर इधर-उधर जाने की क्या जरूरत है। हमारी रक्षा का हाथ साथ रहता है तो फिर डर काहे का? खोटे कर्मों से बाज़ आ जाओ। सत्स्वरूप ईश्वर के चरणों में पड़े रहो। काले इलम वालों के पास तांत्रिकों के पास भूल कर भी नहीं जाना चाहिये। **काले इलम वालों के पास जाना इसका मतलब हमें बाबा पर पूर्ण विश्वास नहीं है।** एक मेरे चरण कमलों का आसरा लो। एक मेरे आनंद नाम का आसरा लो और काले इलम वालों के कभी भूल कर भी निकट नहीं जाना। कभी पास भी नहीं फटकना। जो सत् का नाम दे सकता है वो दुनियाँ में दूसरी कोई चीज़ नहीं दे सकती है। कर्म आया है तो भगवान का नाम लो। भगवान के नाम का आसरा लो। स्वास-स्वास से भगवान के नाम का आसरा लो।

इधर-उधर भटको मत। तुममें से कईयों पर बीमारियाँ आ रही हैं, अपने गलत कर्मों के कारण कर्म भोग रहे हैं। सावधान होकर चलना है। ईश्वर की दया पाना है तो ईश्वर के वचनों का पालन करना है। जो ईश्वर के वचनों को तोड़ देता है वो दयाहीन हो जाता है। मैं जगत् में गुरु की महिमा स्थापित करने के लिये बैठा हूँ, जो इसकी महिमा में बाधा डालेगा वो घोर नर्क में जायेगा। **मैंने दया जिसको देनी है अपने बच्चे के अंदर से देनी है। मैंने जिसको पार करना है यहाँ से करना है। मैंने जिसका उद्धार करना है यहाँ से करना है। मैंने जो कुछ देना है यहाँ से देना है। मैंने जो कुछ भी तुम लोगों को देना है यहाँ से देना है। देने वाला मैं हूँ, बच्चे के अंदर से देना है। मैंने जिसको दया देनी है यहाँ से देनी है और किसी जगह से नहीं।** मैं गुरु महिमा को स्थापित करने के लिये

जगत् में आया हूँ। मुझे तुम में से जिसको भी रक्षा देनी है यहाँ से देनी है। तुम में से किसी को पार लगाना है, यहाँ से लगाना है। दया, कृपा देनी है यहाँ से देनी है। ईश्वर जिसको एक बार अपना लेते हैं, अपना बच्चा बना लेते हैं फिर उसको छोड़ते नहीं हैं। तुम्हारा सबका उद्धार यहाँ पर है। तुम्हारी रक्षा यहाँ पर है। ईश्वर कभी अपने नियम को तोड़ते नहीं है। बच्चे के अंदर से माँ ने देना है। मैंने जो कुछ देना है बच्चे के अंदर से देना है। रास्ता एक जगह से बतायेंगे। ईश्वर-ईश्वर है। पार लगाते वक्त किसी दूसरे के पास नहीं जाना पड़ेगा। जो कुछ मैंने देना है यहाँ से देना है। इस बात का पूर्ण रूप से विश्वास रखो।

" जै मैय्या "

मीठे वचनों से सदा सबका स्वागत् कीजै।
कोमल मीठी बानी से सबका मन हर लीजै ।।
मीठी बानी से सदा आतम् हो प्रसन्न।
मीठी बानी बोलते शांत रहें तन मन ।।

श्री साईं गीता।।११९८।।

भूलकर भी सत्पुरुषों का करो नही त्रिस्कार।
सत्पुरुषों में आप है पार उतारन हार ।।
सत्पुरुषों के अंदर से निकले प्रभु की बानी।
सत्पुरुषों की साची महिमा किसी किसी ने जानी ।।

श्री साईं गीता।।१२००।।

श्री साईं गीता अमृतम्

प्रेमी हर जा देखता प्रेम भरा संसार ।
सब रूपों में भासता साईंनाथ अपार ।।
जग साईं को रूप है ग्रन्थन कियो पुकार ।
हरि भक्तों को जीवन में एक साईं आधार ।।

श्री साईं गीता।।१२२६।।

मौज मजे के जीवन में होएँ पाप कर्म ।
जीव धर्म को छोड़कर करता सदा अधर्म ।।
पापी जग में मौज उड़ाएँ आगे नरक अगन् ।
सादा रहनी में मेरा जन मो में होए मगन।।

श्री साईं गीता।।१२३९।।

लाख जतन कर कर मर जावैं ।
साईं विमुख शान्ति नहीं पावैं ।।
जो हरि भक्ति मन लगावैं ।
अन्तकाल सुख से घर जावैं।।

श्री साईं गीता।।१२६८।।

मूर्ति पूजा से शुद्ध हो जाए मन ।
मूर्ति पूजा से हर को पाए जन ।।
मूर्ति पूजा में है शक्ति भरी ।
मूर्ति पूजा से सब रचना तरी ।।

श्री साईं गीता।।१२८०।।

साईं प्रीतमा तुझपे कुरबान

ऐसी कोई भी साधना नहीं है जो शरणागति का मुकाबला कर सके। इच्छा में रहने वाला ही बाज़ी जीतता है। इच्छा में रहना ही परम धर्म है। इच्छा में रहने से ही पूरी दया आती है। इच्छा में रहने से खोटे कर्म चले जाते हैं। कर्म थोड़े-थोड़े में कटता है। अंत:करण निर्मल होता है। पवित्र होता है। इच्छा में रहनेवाले का जन्म-मरण का चक्कर खतम होता है। यहाँ भी पूरी रक्षा होती है मरने के बाद भी पूरन रक्षा होती है। जो सदा भोलेनाथ की इच्छा में रहता है वो उनकी तरह ही निर्मल बच्चा बन जाता है। इच्छा में रहने वाले की दुर्गति हो ही नहीं सकती। पूरण दया को पाता है। अंदर का अंधेरा दूर हो जाता है। अंदर में प्रकाश हो जाता है। इच्छा में रहना उनकी दया के बगैर नहीं होता है। इच्छा में रहने से जीव में सरलता आ जाती है। सभी विकार निकल जाते हैं। जो सदा इच्छा में रहता है उसकी हर पल रक्षा होती है। जो सदा शिव इच्छा में रहता है उनके लिए हर रोज ही शिवरात्री है। हर नया दिन उसके लिए उमंग लाती है। सदा सर्वदा इच्छा में रहो। हरि दया करेंगे। इच्छा है क्या। जो तुम वाणी हर रोज सुनते हो उसमें सच्चे मन से चलना, वो ही इच्छा में रहना है। जो सच्चे मन से हमारे वचनों को हृदय में धारण करता है उसका उद्धार हो जाता है। उसका कल्याण हो जाता है। जो वचनों को तोड़ता है भयानक तकलीफ उठाता है। जो वचनों में रहता है खेल तमाशे में अपने कर्म पूरे करते हैं। इच्छा में रहने को प्यार कहते हैं। भक्ति भी कहते हैं। जो अपने इष्ट की इच्छा में नहीं रहता उसकी भक्ति कैसी, प्यार कैसा। Always try to keep you on the right side of God. Never be caught on the wrong side of God. भगवान के मन को समझने की कोशिश करनी चाहिए। भगवान भोलेनाथ दया के सागर हैं, करुणा सिंधु हैं। कपटी जीव की पहुँच वहाँ नहीं है। जैसे वो सरल है वैसे राम भी सरल है। क्योंकि वो खुद एकदम बच्चे की तरह सरल है। निर्मल जीवन के बिना हम शुद्ध पारब्रह्म में मिल नहीं सकते हैं। सच्चाई पर चलने के लिए एक-दो नहीं लाखों तकलीफें आएँ सहन

करेंगे। सच्चाई को छोड़ेंगे नहीं। मन निर्मल होना चाहिए। इस सच्चाई को समझना है। प्रियतम की याद सताए नहीं, प्रियतम के विरह में तड़पे नहीं तो मिलन कैसे होगा? जिसके मन में लोभ लालच है, छल कपट है प्रियतम की याद कैसे आएगी? वो भगवान के विरह में कैसे तड़पेगा? यदि तुम मुझे सच्चा प्रेम दे सकते हो तो तुम मुझे पा सकते हो। जिसने एक बार सच्चे प्रेम का प्याला पी लिया उसके लिए दुनियाँ हेच हो जाती है। रूखी-सुखी खाओ अल्लाह का लाख शुक्र करो। रूखी-सुखी में भगवान मिलता है। प्यार सच्चा है तो अपनी आत्मा को किसी भी हालत में बेचेंगे नहीं। भक्त अपने प्रियतम की याद में आठों पहर खोया हुआ पड़े रहता है। जो कुछ करता है अपने प्रियतम के लिए करता है। शुद्ध भाव से किया हुआ थोड़ासा भजन भी सुख देता है। मन संसार में जा रहा है हम मुँह से भगवान का नाम ले रहे हैं तो कुछ होता नहीं है। जब-जब दु:ख तकलीफ आएँ नाम सिमरन छोड़ना नहीं चाहिए। लगातार करने जाना चाहिए। कर्म की गति ढीली पड़ जाती है। सत् के प्रचार से बढ़ कर सच्ची पूजा और कौन सी हो सकती है। दूसरों के मन की गति को मोड़कर उनको पाप कर्मों से हटा देना सत्मार्ग पर लगा देना, उनके दु:ख दर्द दूर करना ये कोई मामूली साधना है क्या? किसी का मन बदल देना, पाप कर्मों से हटा कर सत् कर्मों में लगा देना इस जैसी कोई सेवा हो नहीं सकती। सत् सेवा में लगे रहो, सत् सेवा का कोई भी मौका जाने मत दो। सर्बत का भला होएगा तो तुम्हारा भला अपने आप हो जाएगा। सर्बत के भले की सोचो। सबसे बड़ी बात है, वासना को मन में खड़ा रहने मत दो। जैसे वासना मन में उठे उसी पल उसकी जड़ काट देनी चाहिए। थोड़ी देर भी वासना को मन में खड़े रहने मत दो। जो हुआ सो हुआ उस पर मिट्टी डाल दो। सबसे गलतियाँ होती है तो सच्चे मन से जो गलतियाँ हुई है उनके लिए माफी माँगता है और आगे न करने का संकल्प करता है तो उसके बहुत सारे पाप माफ हो जाते है। उद्धार उसी का होएगा जिसने सच्चे मन से संकल्प कर लिया आगे झूठा कर्म नहीं करूँगा। उसका उद्धार होने ही वाला है। जो मक्कार है, फरेबी है, अंदर से छल-कपट करता है, ऊपर से दूसरों के साथ अच्छा रहता है वो sneeky

होता है। ऐसे जीव से मुझे जबरदस्त घृणा होती है। वो मुझे जरा नहीं भाता है। कभी अपने को अच्छा जाहिर करने की कोशिश नहीं करना चाहिए। कमजोरियाँ भगवान के सामने रखना चाहिए तो वो सुधार हो जाता है। सबसे ज्यादा मुझे सरलता पसंद है। जैसा अंदर वैसा बाहर। भले ही गलती हो जाए मुझसे छिपाता नहीं है, मन का तो साफ है, छल-कपट तो नहीं है उसके अंदर। अंदर कुछ बाहर कुछ जीव को न क्षमा मिलती है। आगे जाकर अपनी करनी को भोगता है। ईश्वर की दया को पाना है तो एक बच्चे की तरह सरल बन जाओ छल-कपट को निकट मत आने दो। किसी का बुरा मत चाहो, किसी का बुरा मत सोचो। किसी का भी मन मत दुखाओ। सबसे प्रेम का व्यवहार करो। प्रेम से पेश आओ। मीठे वचन बोलो, मीठी वाणी बोलो। अपनी चिंता करो, दूसरों की सेवा करो, यही काम करने का है।

पूरन की रक्षा केवल उसी के लिए है जो पूरन के अर्पित होकर जीवन व्यतित करता है। जो अपनी मर्जी में, अपनी इच्छा में रहता है पूरन की इच्छा में नहीं रहता है उसकी बनी, बिगड़ जाती है। इच्छाओं की पूर्ति हमें पूरन से अलग कर देती है। पूरन की इच्छा में एक बच्चा ही रह सकता है बड़ा नहीं। बड़े को सौ इच्छाएँ हर दम घेरे रहती है। बच्चा पूरन की दया में दिन-रात नहाता है। संसार के मेले में आए तो सब तमाशा देखना पड़ेगा। अच्छा भी बुरा भी परन्तु डरना नहीं। माँ साथ है तो डर भी काहेका यही जगत की असलियत है। इस जगत् में आकर जो एक माँ का आधार रखता है वो बच जाता है नहीं तो माया बहुत चक्कर देती है। घुमाती ही घुमाती है। ईश्वर की सच्ची महिमा जान कर ईश्वर अर्पित होना है। सबसे सच्ची महिमा यही है ईश्वर के बिना कुछ नहीं है। शरीर को प्रकृति के हवाले कर देना ये तेरा है इससे जो भी करम कराने हैं कराते जाओ। मुर्दे को माता प्रकृति के हवाले कर दो। किसी को दोष मत दो। हमारे अपने ही कर्म पूरे हो रहे हैं। इसी में रहने से शांति मिलती है।

"जै मैय्या"

शब्दब्रह्म

श्री साईं गीता

साची प्रीत लगी ना घट में करता सदा दिखावा ।
मन रहता है विषयन माहीं सतूबुद्धि नहीं पावा ।।
गुरु की बानी माने नाहीं साचे घर ना आवा ।
सतूसंगत में सतगुरु साईं अमृत रस वर्षावा ।।

श्री साईं गीता।।१२७२।।

नवरात्रों में बड़े भाव से भजन माई का कीजै ।
माँ के पावन नामों का निशदिन अमृत पीजै ।।
नवरात्रों के भजन की महिमा अपरम्पार ।
श्री भगवती दया से जीव होएँ भव पार ।।

श्री साईं गीता।।१२७६।।

इस जग की मीठी बातों में तू काहे मन भरमाता है ।
भूल भूल ना राही तेरा एको साचा नाता है ।।
जीवन की बहती नदिया में से कोई गाते जाता है ।
मत भूल मुसाफिर देख उधर तेरा साईं तुझे बुलाता है ।।

श्री साईं गीता।।१२७८।।

कृपासिन्धु साईं को जानै जाननहारा ।
जो अपने साईं को भूला सो किस्मत का मारा ।।

" ॐ श्री साईं "

OUR HEART - OUR SOUL

O Beloved Papa! Let your message of Love and Peace spread to more and more areas during the year 2010. Let Your Blessings reach to many more people so that they live in Peace and Harmony. Let Sri Sai Geeta enlighten more and more souls so that they can attain You. Let a peaceful atmosphere prevail throughout the world. Let there be no killings of innocents for none of their faults. We most humbly pray to Thee on this the New Year day. – *Amen*

Our Beloved Papa Sri Anand Sai lived a very simple life. He was strongly against ostentatious living. He said – **"Ostentatious living destroys the seed of spiritual life. Lead a simple life. Have few wants. Your life shall become highly blessed. "Om Sri Sai."**

Beloved Papa also said – **"Earn according to your needs. Accumulation of money is a sin. To accumulate wealth is to deprive others of their due share from the National Wealth. Lead a simple life with a few wants. That is the basis of Eternal Spiritual Life. "Om Sri Sai."**

Why was He against an ostentatious life. He would explain in a very simple way. He used to say for ostentatious living, one needs a lot of money. Lots of money cannot be accumulated through fair means, in general. For accumulation you are bound to follow sinful or unfair practices. One can never think of ostentations with honest earnings. By honest earnings one can only lead a simple life. If you lead a simple life you will never feel to be inclined towards unfair earnings. If you are not inclined towards unfair earnings you will lead a peaceful, carefree life. Your attraction towards The Almighty will

automatically increase due to peace in your life. By The Grace of The Almighty you will positively be led to a Mentor who is known as *Satguru.* Once you get a True Mentor you are bound to attain your Goal and be freed from the cycle of birth and death. Beloved Papa said that if you earn honestly other things come naturally to you.

One would say it is very difficult to lead such a life in the present atmosphere. No, that is not true at all. It is possible to lead your life by honest earnings. If you lead such a life, God's Helping Hand is always with you. In the time of need, His Holy Divine Hand will fulfill your requirements without any tensions of any sort. Once your needs for that moment are fulfilled, one is surprised to know how He helped him during that critical period. Yes, He will not give you more to accumulate but your every need (big or small) will be taken care of. Beloved Papa used to say that Baba never gives riches to His beloved children but He sees to it that all the requirements of His children are fulfilled. Baba's children never ask for any favour from Baba. In all situations they only say – **"Thy Will be fulfilled, O Lord"**. When they utter these words Baba Himself sees to it that His child is not pained, He reduces the *karmas* of such a child to a minimum. So why not lead a life as per Baba's wish which is always beneficial to us.

Love is the foundation of spritual life, that is what we have learned from our Beloved Papa. Love for Love sake takes the seeker to great heights. Pure, Unadulterated Love for Baba pulls His Grace. By the Grace of Baba Sai Nath only can one realize Him. Baba Sainath seeks nothing but pure love from His children. He prefers that His children offer themselves rather than offering perishables to Him. In other words self-surrender is what He asks for, He seeks from us. Pure love is a product of self surrender or it can also be said that self surrender is a product of pure love.

One cannot tread on this path without The Grace of The *Satguru*. The Grace of The *Satguru* is of utmost importance. You may do numerous *Sadhnas,* chant His name, sing His glories but without the Grace of The *Satguru* you cannot go too far on the spiritual path. The *Satguru's* Grace works wonders. Only by The Grace of *Gurudev* can you know what spirituality is. To obtain The Guru's Grace you have to shed your false ego. Me & Mine are the biggest obstacles in the path of spirituality. History narrates numerous examples of saints and sadhus who reached great heights, but for their ego which crushed them, razed them to dust. All their spiritual progress was burned as camphor as soon as the demon ego raised its head. "Pride comes before a fall." We very well know that whatever we achieve is not due to our own efforts – but due to The Grace of the Almighty, then, why not surrender our own self at His Lotus Feet. Do your duty sincerely, take all efforts and leave the results to Him. Surrender does not means that you are not to make any efforts or to sit idle thinking that I am a surrendered soul. One has to work, diligently knowing that one's efforts will bear fruit only by His Grace, moving with the knowledge that He is moving my limbs, me.

So, Love God unconditionally and rest will be taken care of by Him.

Let us stop here for a moment, seek The Blessings of Beloved Papa, thank Him for everything which He has bestowed on us. Let Baba's Grace be showered on all throughout the year 2010 and Baba's Blessings be with you for your entire life.

"Jai Jai Data Anand Sai."

"Sri Guru Charnan Samarpayami."

SAI SUPREME

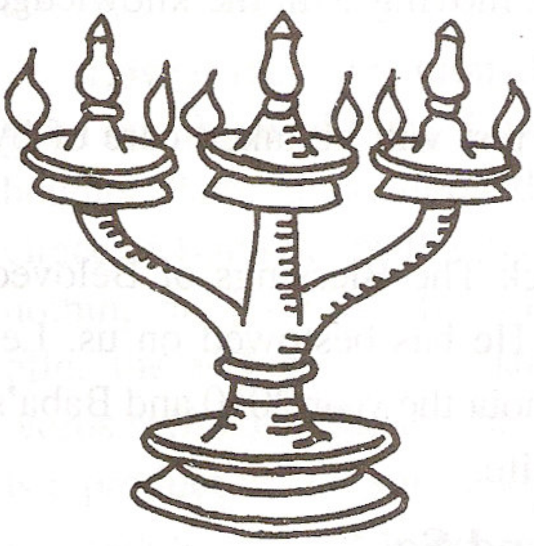

Sai is
The Mystic Power
That activates
And animates
All forms
Beyond intellect
Beyond reason
Is He,
Behind the Veil
He defies all norms.
To know Him
Are you keen?
He pervades everything
Seen and unseen.
When we mention Sai
Say Sai
It is
The Lord Supreme
That we mean.

"Om Sri Sai."

DIVINE PATH

(From the speeches of 'PAPA' Sri Anand Sai)

Be Humble Loving and Kind

All Saints are Sri Maharaj, Baba Sainath.

Offer yourself to Me everyday, every minute. The path of righteousness is for My children. The path of righteousness is the path of harmony and love. I love those who forsake their ego and strive to attain Me in every possible way. My Grace helps them to reach Me. I am the Beloved Mother of My children, their only love. They love Me immensely and I, in return make them the object of My Love. I, the Supreme Being accept them in My Infinite Bossom. People who are still toiling in worldliness can hardly imagine the bliss of My Being. People who are still in ignorance of multiplicity can only dream of what The Nectar is. I am The Supreme Nectar. One who tastes this Nectar, he alone knows what it is, what Joy, what Bliss, what Peace! The Bliss of Atman, the Joy of the Infinity! You are all My integral part. You all inherit a drop of that Bliss by which you sometimes become happy. In certain moments of joy you experience a drop of Bliss. But one who lives Within by My Grace knows what The Ocean of Nectar is, which the honey bee ever sips in the inner spinning wheel of The Universe. Nectar in all directions, everywhere, in every situation, one who has got this feeling is Mine and I am his.

One who loves Me whole heartedly, One who surrenders to Me whole heartedly, One who offers himself to Me whole heartedly, One who offers to Me everything that he calls his own including his ownself, he merges forthwith into Me. I accept his surrender. I, the Supreme Being submerge his individuality into My all pervading Divine Personality. I, The Creator of all, I dispense with all his *Karmas*. I, the dispenser of Justice allow him to merge into My Infinite Personality with all his acts of omission and commission. Come unto Me for refuge, My children, and I shall surely save you. I shall take upon Myself all your sins if you surrender yourselves to Me whole heartedly and be Mine. Mine in body, Mine in mind, Mine in spirit. I am the end of all *sadhnas*. I am the goal of the *Yogis*. Discard your false ego and come unto Me with true love. **Offer yourself to Me, humble yourself into Me and I shall accept you in My Infinite Bossom. This is My Eternal vow.** I bring unto Me those who are worthy of My Love. Those who are virtuous by nature, egoless by behaviour and steadfast in their love and devotion come unto My Lotus Feet. I help such pure souls to reach Me in the shortest possible time. I cut short their courses of life and death. I stay with them, in them. They stay in Me. I am disclosing this wisdom to you so that you all should try to inculcate, imbibe all these qualities into your character. **Try to be humble, loving and kind. Listen again, Humble, Loving and Kind. I, your Mother am very fond of these qualities.**

The Whole Creation should be your family.

"Jai Maiya"

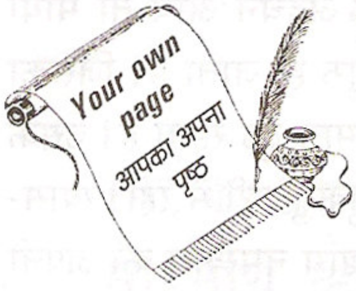

अतीव प्रिय रेखा रेणू,

बच्चों ये चिट्ठी नहीं रहती ईश्वरीय वचन हैं। ये उनकी दया है कि आप तक ये वचन पहुँचा रहे हैं तुरन्त दया पानी है तो अर्पित हो जाओ। ईश्वर अर्पित जीवन में मन सदा शान्त रहता है। सुख आये या दुख आये – जो भी आता जाये ईश्वर की इच्छा जान कर लेते जाना चाहिये यही तो सच्चा प्रेम है। बच्चों जिस मन में वासना नहीं है वो बादशाह है। सच्ची प्रीति में मतलब नहीं होता। ईश्वर की इच्छा में रहने से अहम् अपने आप खतम हो जाता है। ईश्वर के विधान में सब कुछ चल सकता है अहंकार नहीं। अहम् सब साधना को खा जाता है। कभी मन को गलत तरफ जाने नहीं देना। सब से प्रेम करना। एक आदर्श गृहस्थ जीवन व्यतीत करो। घर की जवाबदारी बड़े प्रेम से दो। भावना से कर्तव्य ऊँचा है। त्याग और वैराग्य का अर्थ क्या है? नाशवान वस्तुओं से मन हटा कर अविनाशी में रहना। सदा सत् और असत् का मन ही मन निर्णय करते रहना। छल कपट किसको कहते हैं? जब किसी के दिये हुए को अपना लेते हैं। मलकीयत जमा लेते हैं ये मेरा घर है, ये मेरे बच्चे हैं। मैं और मेरा में चले जाते हैं हमारा जीवन गिर जाता है। हमें गृहस्थ में रह कर हर सुन्दर से सुन्दर चीज़ का प्रयोग करना है, लेकिन अपनाना नहीं है। ईश्वर की देन में रहना है। **Success lies in acceptance. Acceptance of the Divine Will. When the things do not turn out to our wishes. The worry is the result.** अपनी मर्जी को ईश्वर की मर्जी में मिलाते जाना है। कई बार भजन, साधना, नाम सिमरन करते हुए भी हम चिन्तित रहने लगते हैं। **Basically** वो हैं पूर्व जन्मों के संस्कार। हमारी सोच यदि ठीक है तो संस्कार का जोर निकल जाता है। भक्ति भाव की सीमा है अपने आपको गंवा देना। जिसने अपने आपको गंवाया नहीं हरि को पाया नहीं। गायत्री जप करो, समझ कर करो। अर्थ समझ कर गायत्री जप करने से और गायत्री जी में रहने से हमारी रेखाएँ भी बदल जाती हैं। हर नया दिन तुम्हारे लिये नई दिवाली है। सदा प्रसन्न चित्त रहो। **Ram Naam lessons the intensity and duration of Karma.** जब तक ईश्वर में प्रेम तीव्र नहीं होता तब तक ईश्वर में मिलन नहीं हो सकता। जीवन में सफलता पाने की जरूरत है तो प्रेम की पवित्रता में मिलावट कभी आने देना नहीं। सच्चे प्रेम में मिलावट आ गई तो ज़हर घुल गई और यदि प्रेम में

पवित्रता रही तो अमृत ही अमृत है। जब जब हमारे ऊपर कोई अड़चन आये तो माया को मौका मिल जाता है जीव को भरमा देने का। जीव गिरना शुरु हो जाता है। जिसका निश्चय पक्का है जो अड़चन में भी डगमगाता नहीं, चट्टान के समान दृढ़ रहता है। उसके जीवन का सफर हँसते खेलते तय हो जाता है। भजन करो सदा शुक्रगुजारी में रहो। स्वास-स्वास से ईश्वरीय कृपा को मन ही मन नमस्कार करते जाओ। साष्टांग नमस्कार की अपनी ही महिमा है। साष्टांग अवश्य करना चाहिये। ईश्वर के खजाने में कुछ भी कमी नहीं है। हर कोई दिल खोल कर ले सकता है लेकिन पात्रता चाहिये। बच्चों घर की सब जवाबदारी देते हुए सदा भजन में रहा करो। जगत् कल्याण के लिये कुछ समय नाम जप या किसी भी रूप से भजन करो। बाबा की वाणी आप तक पहुँच जाती है तो मुझे बड़ा संतोष हो जाता है। आपस में भी मिलो तो सत्संग ही करो। समय का पूरा फायदा उठाओ। घर-परिवार में सबको आदर सहित नमस्ते व प्यार दे दीजिये। यहाँ सब कुशल है।

आपकी मम्मी

लाज पॉल, नागपुर

(यह पत्र श्रीमती लाज पॉल ने लुधियाना में रह रहीं अपनी बेटियों को १९.१०.९० को लिखा था।)

"गुरुदेव श्री आनंद साईं"

विघ्नहर्ता गुरुदेव श्री आनंद साईं।
दुःखहर्ता गुरुदेव श्री आनंद साईं।।

पाप विनाशक गुरुदेव श्री आनंद साईं।
ताप विनाशक गुरुदेव श्री आनंद साईं।।

सुखकर्ता गुरुदेव श्री आनंद साईं।
मंगलकर्ता गुरुदेव श्री आनंद साईं।

निर्धन के घन गुरूदेव श्री आनंद साईं।
निर्बल के बल गुरुदेव श्री आनंद साईं।।

अशरण शरण गुरूदेव श्री आनंद साईं।
तरण तारण गुरुदेव श्री आनंद साईं।।

शरण लीन्हा गुरुदेव श्री आनंद साईं।
निर्मल कीन्हा गुरुदेव श्री आनंद साईं।।

तुम को पाना और कछु भी चाहें नाहीं।
हम तुम्हारे तुम हमारे आनंद साईं।।

नाम तुम्हारा पल भर भी छूटे नाहीं।
आनंद साईं आनंद साईं आनंद साईं।।

"अन्जान"

साईं का आनंद पथ

साईं का आनंद पथ बड़ा अनोखा, जो इस पर चल पाए ।
साईंनाथ की कृपा वो तो, घर बैठे ही पा जाए ।।

साईं नाम को जपते जपते सोए भाग्य जगाए ।
साईं का अनमोल खजाना झोली में न समाए ।।

आनंद साईं, आनंद साईं नाम मधुर जो गाए ।
श्रद्धा और सबूरी का गुरुमंत्र उसे मिल जाए।।

साईं गीता के पन्नों में, साईं दरस हो जाए ।
जीवन के हर कष्ट से तुमको, साईं राम बचाए ।।

साईं-ज्योति जलाकर बन्दे, जग उजियारा पाए ।
जाति-पाति का भेद रहे ना, जग साईंमय हो जाए ।।

सबका मालिक एक है जग में जब तोहे समझ आए ।
मंदिर-मस्ज़िद कभी न भटके, शिर्डी धाम ही आए ।।

चंचल मन को बस में कर, क्यों कर चैन गँवाए ।
'इन्दु' साईं ध्यान में खोकर, अमृत रस पा जाए ।।

– *इन्दु श्रीवास्तव*, लखनऊ

बहुत साल पहले की बात है। मेरी माताजी बहुत बीमार हो गईं। मलेरिया ने भयानक रूप ले लिया। तरह-तरह के इलाज हुए पर हालत बिगड़ती ही गई। एक दिन मेरे पिताजी का फोन आया कि – ''डॉक्टर ने जवाब दे दिया है। बस यह अब अंतिम स्वास गिन रही है। तुम उनके आखिरी दर्शन पाने आ जाओ।'' ऐसा सुनकर मन बहुत दुःखी हुआ। गुरुदेव श्री आनंद साईंजी महाराज उन दिनों पंचमढ़ी गए हुए थे। मन ही मन में गुरुदेव से प्रार्थना किया – ''आपके होते हुए यह जीव खाली हाथ वापिस जा रहा है। कृपया इन्हें भी आध्यात्मिक जीवन प्रदान कीजिए।'' ज्यादा याचना करने का समय तो न था, गाड़ी का समय हो रहा था। मैंने जल्दी-जल्दी में श्री साईं गीता पावन ग्रन्थ अपने सूटकेस में रख दिया। गाड़ी में बैठते ही न जाने क्या हुआ, सूटकेस खोला और श्री साईं गीता का पारायण करना शुरु कर दिया। पूरी शाम बीत गई, रात भी चली गई, सुबह हो गई पर साईं गीता छोड़ने को न मन चाह रहा था, न आँखों में नींद थी और न ही थकावट लग रही थी।

जब देहली में अस्पताल पहुँची तो माँ की हालत बहुत गंभीर थी। बस चन्द घण्टों की ही मेहमान लग रहीं थी। चारों ओर डॉक्टरों और नर्सों की टीम उनको मृत्यु के मुख से बचाने में लगी हुई थी। ड्रीप (**drip**) लगी हुई थी, वह बेहोश थीं। जो-जो सेवा डॉक्टर ने करने को दी, वह करती और साईं गीता पढ़ने बैठ जाती। तीन दिन तक मुझे कुछ मालूम नहीं कब सुबह हुई कब शाम हुई। बस मैं थी और श्री साईं गीता थी। चौथे दिन मेरी माताजी ने आँखें खोली और ऐसे बात किया जैसे वह बिल्कुल नॉरमल हों। दो दिनों के पश्चात् उनको छुट्टी भी मिल गई। इस प्रकार श्री गुरुदेवजी की अपार दया से श्री साईं गीता ने जीवन प्रदान किया। कई बार श्री गुरुदेव प्रवचन करते-करते कहते थे – ''श्री साईं गीता से कईयों की जानें बच रही हैं'' तो मुझे यह घटना अवश्य याद आ जाती है।

– **आशा छाबरा**, नागपुर

हमारे अन्य हिन्दी प्रकाशन

	प्रकाशन	मूल्य
1.	श्री साईं गीता *(एक सगुण जीवन की निर्गुण गाथा)*	250.00
2.	श्री अमृत सागर *(सरल शब्दों में मातृ उपासना)*	100.00
3.	साईं माँ	40.00
4.	जय गुरु शक्ति	25.00
5.	श्री गुरु लीला अमृत *(स्वामी सीतारामदासजी महाराज की जीवनी)*	10.00
6.	अमर ज्योति *(1000 अनमोल वचनों का संग्रह)*	18.00
7.	श्री गायत्री रस अमृत	3.50
8.	सब का राखा तू	10.00
9.	वचनमाला	7.00
10.	मन्त्रमाला *(बाबा साईंनाथ के 108 मंत्र)*	7.00
11.	श्री शिव महिमा	6.00
12.	श्री हनुमान महिमा	5.00
13.	श्री साईं महिमा	10.00
14.	श्री कृष्ण महिमा	5.00
15.	श्री राम महिमा	7.00
16.	अमृत वाणी *(श्री राधाजी की महिमा)*	5.00
17.	श्री दत्तात्रेय महिमा	5.00
18.	श्री नारायण महिमा	7.00
19.	श्री नरसिंह महिमा	3.00
20.	श्री भगवती सीता महिमा	3.00
21.	राम नाम की अनन्त महिमा	4.00
22.	श्री गंगा महिमा	10.00
23.	श्री दुर्गा पूजा	8.00
24.	श्री महाकाली अमृतम्	7.00
25.	श्री विष्णु सहस्त्र नाम *(भावार्थ सरल हिन्दी भाषा में)*	10.00
26.	मैनावती कहे गोपीचन्दा	2.00
27.	श्री रक्षा मन्त्र	5.00
28.	गुरु माते हर हर हर	5.00
29.	जय नौ नाथ	3.00
30.	प्यार की तरंगें	4.50
31.	आनन्द का पथ	4.00
32.	भविष्य की झलक	8.00
33.	रोग दूर करने के अध्यात्मिक उपाय	7.00

व अन्य कई प्रकाशन

Reg. No. 30/09 dt. 20/04/2009

ॐ श्री साई

हमारा पता : **साईं पब्लिकेशन्स**
श्री आनंद साईं मार्ग, आनंदा अपार्टमेन्टस, क्लार्क टाऊन, नागपुर-440004.
फोन : 0712 -6574825, भ्रमण ध्वनिः 9823134765